Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष- 41 अंक-47
कल्पादि सम्वत् 1972949117

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 14 फरवरी से 20 फरवरी 2018 तक
फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी से फाल्गुन शुक्ल पंचमी 2074 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

संबधों का नया.. पृष्ठ- 3

डायबिटिक नैफ्रोपैथी... पृष्ठ- 4

सन्ध्या ईश्वर की उपासना.. पृष्ठ- 5

पुणे का शनिवारवाडा... पृष्ठ- 8

जो पूंजीपति मन भाए. पृष्ठ- 12

- एक देश, एक चुनाव का नया जुमला
- जनसंख्या नियंत्रण पर कानून बनें
- केन्द्रीय विद्यालयीय पाठ्यक्रमों में इस्लामिक आक्रान्ताओं का महिमा मण्डन क्यों?
- आमजन की पूंजी गर्त में डालने की तैयारी

पाकिस्तान-बांग्लादेश बॉर्डर पर तैनात होंगे बीएसएफ के ७००० जवान

सीमाओं को पूरी तरह से सील किया जाये–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

पाकिस्तान से लगी देश की अशांत सीमा की पहरेदारी करने वाला सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) छह नई बटालियन गठित करेगा। जिनमें करीब ७००० कर्मी होंगे, गृह मंत्रालय ने बीएसएफ को २०६०.६४ करोड़ रुपये की राशि भी आवंटित की है। नई बटालियनों को भारत–बांग्लादेश सीमा पर तस्करी और घुसपैठ के जोखिम वाले इलाकों में भी तैनात किया जाएगा। सूत्रों ने बताया कि बल द्वारा नई भर्तियां किए जाने वाले सैनिकों को छह बटालियनों में तैनात किया जाएगा। करीब साल भर में शेष पृष्ठ 11 पर

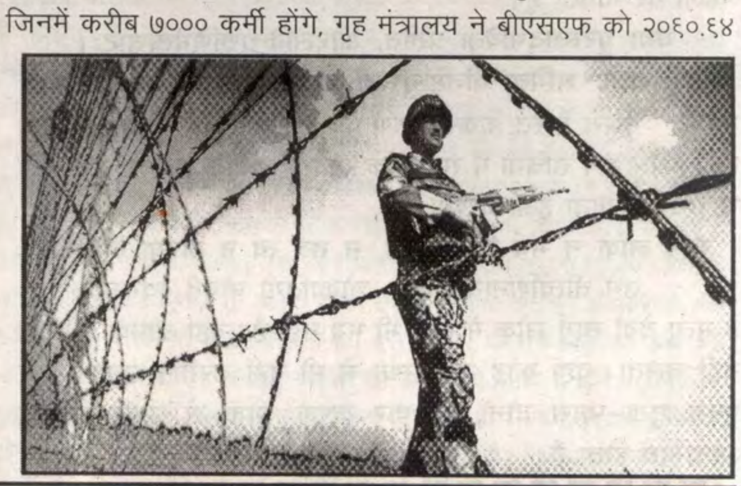

शोपियां फायरिंग मामले में सेना ने कराई काउंटर एफआईआर, दो नागरिकों की गई थी जान

भारतीय रक्षा मंत्री की चुप्पी का हिन्दू महासभा ने किया विरोध

● संवाददाता ●

२७ जनवरी को शोपियां में सेना की फायरिंग में दो लोगों के मारे जाने के बाद जम्मू–कश्मीर सरकार ने आर्मी मेजर समेत सेना के कई लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई है। इसके बदले में सेना ने भी काउंटर एफआईआर दर्ज कराते हुए कहा है कि उन पर हमला किया गया था और उन्होंने आत्मरक्षा में गोली चलाई। सेना ने इस मामले में मेजर को क्लीन चिट भी दी है। इस बीच राज्य सरकार के इस रुख से खफा बीजेपी नेता सुब्रमण्यम स्वामी ने न्यूज एजेंसी एएनआई से बातचीत करते हुए इस मसले पर रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण की चुप्पी पर सवाल खड़े किए। उन्होंने कहा कि मीडिया रिपोर्टों और सोशल मीडिया के मुताबिक जम्मू–कश्मीर की मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने विधानसभा में कहा मैंने शोपियां में सेना की फायरिंग मामले में रक्षा मंत्री से बात की है। उन्होंने कहा है कि आपको लगता है कि यदि कोई अपराध हुआ है तो उसके खिलाफ कार्रवाई कीजिए। स्वामी ने कहा कि इसके बावजूद रक्षा मंत्री ने इस मामले में अपना स्पष्टीकरण नहीं दिया है, क्या हमको उनकी खामोशी को हां माना जाना चाहिए। यदि ऐसा है तो यह पार्टी की नीतियों, भारतीयों की भावनाओं और देशभक्ति के खिलाफ है। यदि वह दो फरवरी तक इस मामले में अपनी सफाई नहीं देती तो मैं इस मुद्दे को सदन में उठाऊंगा। इससे पहले बीजेपी नेता सुब्रमण्यम स्वामी ने जम्मू–कश्मीर सरकार के शेष पृष्ठ 11 पर

वैवस्वत मनु की पौराणिक कथा

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्य करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।।(कठोपनिषद)

वह परमात्मा हम (आचार्य और शिष्य) दोनों की साथ–साथ रक्षा करे। हम दोनों का साथ–साथ पालन करे। हम साथ–साथ विद्या सम्बन्धी सामर्थ्य प्राप्त करें। हम दोनों का पढ़ा हुआ तेजस्वी हो। हम द्वेष न करें। त्रिविधताप की शान्ति हो।

आशाप्रतीक्षे संगत सूँनृतां च, इष्टापूर्ते पुत्रपशुँश्च सर्वान्।
एतद्वृङ्क्ते पुरुषस्याल्पतमेधसो, यस्यानवश्नन्वसति ब्राह्मणो गृहे।।

जिसके घर में ब्राह्मण अतिथि बिना भोजन किये रहता है उस मन्दबुद्धि पुरुष की ज्ञात और अज्ञात वस्तुओं की प्राप्ति की इच्छाएं, उनके संयोग से प्राप्त होने वाले फल, प्रिय वाणी से होने वाले फल, यागादि इष्ट एवं उद्यानादि पूर्त कर्मो के फल तथा समस्त पुत्र और पशु आदि को वह नष्ट कर देता है।

तिस्रो रात्रीर्यदवात्सीर्गृहे मे, अनश्नन्ब्रह्मन्नतिथिर्नमस्यः।
नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन्स्वस्ति मेऽस्तु, तस्मात्प्रति त्रीन्वरान्वृणीष्व।।

हे ब्रह्मन्! तुम्हें नमस्कार हो, मेरा कल्याण हो। तुम नमस्कार योग्य अतिथि होकर भी मेरे घर में तीन रात्रि तक बिना भोजन किये रहे, अतः एक एक रात्रि के लिये एक एक करके मुझ से तीन वर मांग लो।

शान्तसंकल्पः सुमना यथा स्याद्वीतमन्युर्गौतमो माभि मृत्यो।
त्वत्प्रसृष्टं माभिवदेत्प्रतीत, एतत्त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे।।

हे मृत्यो! जिससे मेरे पिता वाजश्रवस मेरे प्रति शान्त संकल्प, प्रसन्नचित्त और क्रोध रहित हो जायं तथा आपके भेजने पर मुझे पहचानकर बातचीत करें–यह मैं (आपके दिये हुए) तीन वरों में से पहला वर मांगता हूं।

यथा पुरस्ताद्भविता प्रतीत, औद्दलकिरारुणिर्मत्प्रसृष्टः।
सुखँ रात्रीः शयिता वीतमन्युस्त्वां ददृशिवान्मृत्युमुखात्प्रमुक्तम्।।

मुझसे प्रेरित होकर अरुण पुत्र उद्दालक तुझे पूर्ववत पहचान लेगा। और शेष रात्रियों में सुखपूर्वक सोवेगा, क्योंकि तुझे मृत्यु के मुख से छूटकर आया हुआ देखेगा।

स्वर्गे लोके न भयं किंचनास्ति, न तत्र त्वं न जरया बिभेति।
उभे तीर्त्वाशनायापिपासे, शोकातिगो मोदते स्वर्गलोक।।

हे मृत्यु देव! स्वर्ग लोक में कुछ भी भय नहीं है। वहां आपका भी वश नहीं चलता। वहां कोई वृद्धावस्था से भी नहीं डरता। स्वर्गलोग में पुरुष भूख–प्यास दोनों को पार करके शोक से ऊपर उठकर आनन्दित होता है

साप्ताहिक राशिफल

मेष : कुछ लोगों के लिए यह सप्ताह स्वास्थ्य की दृष्टि से समय अच्छा नहीं हैं। रोजी व रोजगार की तलाश में नवयुवकों को अच्छे अवसर प्राप्त होंगे। अनचाहे समबन्धों के प्रति उदासीनता ही उचित समाधान है। व्यवसायी वर्ग अपने सामान की स्वंय देखभाल करें अन्यथा चोरी होने की आशंका है।

वृष : अष्टम स्थान में बैठा शनि अचानक समस्यायें उत्पन्न कर सकता है तथा नकारात्मक भाव उत्पन्न करेगा। कुछ लोगों का मकान वाहन पर धन खर्च होगा। जो लोग किसी मित्र या रिश्तेदार से किसी लाभ की आशा में है। उनकी इच्छा पूरी होगी। रिस्क न उठाने वालों की आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी।

मिथुन : इस सप्ताह नौकरी में विरोधी आपको परेशान करेंगे जिससे मानसिक पीड़ा बनी रहेगी। कुछ लोगों का स्थानान्तरण होने की सम्भावना है। कुछ लोगों को घर–मकान व वाहन आदि के योग बन रहे है। परिवार में मांगलिक कार्य होगें।

कर्क : कुछ लोगों के कैरियर में प्रगति होने के आसार है। स्वभाव नकारात्मक रहेगा जिससे सन्तान के प्रति उदासीनता बनी रहेगी।। मातृपक्ष को शारीरिक कष्ट हो सकता है। जो लोग कर्ज ब्याज आदि का कार्य करते उन्हें भी सावधान रहने की जरूरत हैं अन्यथा दोहरी समस्याऐ खड़ी हो सकती है।

सिंह : इस सप्ताह व्यापार में प्रगति होगी । परिवारिक सुखों के लिए यह समय श्रेष्ठ साबित होगा। नौकरी पेशा वालों को पदोन्नति के योग बन रहे है। पाइल्स के रोगी अपने स्वास्थ्य पर विशेष सावधानी बरतें अन्यथा कष्ट उठाना पड़ सकता है।

कन्या : आर्थिक मामलों में उन्नति होगी। परिवार की दृष्टि से यह समय अच्छा नहीं है। किसी अधिकारी के सहयोग से पुराना कार्य पूर्ण होगा। व्यवसाय में अत्यधिक निवेश करना मँहगा पड़ सकता है। किसी कारण वश कुछ लेगों में निराशा के भाव उत्पन्न हो सकते है।

तुला : धन की स्थिति में उतार–चढ़ाव आने की सम्भावना है। मान–प्रतिष्ठा का लाभ मिल सकता है, लेकिन कुछ अकेलापन सा महसूस करेंगे। नये व्यापार में कोई रिस्क न उठाये। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। जरूरी कार्यो के प्रति सक्रियता बनायें रखें अन्यथा बाधायें उत्पन्न हो सकती है।

वृश्चिक : इस सप्ताह आय व व्यय के मध्य संतुलन बिगडेगा सकता है। खान–पान पर ध्यान दें, क्योंकि आपके स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन में सामन्जस्य नहीं बन पा रहा है। कार्य व व्यापार में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्यो पर धन का व्यय होगा धार्मिक यात्राओं के योग बनेगें।

धनु : आपका भाग्य पक्ष इस समय कमजोर रहेगा और किसी न किसी रूप से आपको मानसिक तनाव झेलना पडेगा। कुछ लोगों को सरकारी मामलों में सावधान रहने की आवश्यकता है। जो लोग हार्ट के मरीज है, वे अपने आहार पर विशेष ध्यान दें।

मकर : इस सप्ताह आपके धन, सम्पत्ति, मान, सम्मान आदि में वृद्धि होगी। लेकिन परिवार में आपसी मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। आपके पैरों मे अनावश्यक पीड़ा हो सकती हैं तथा पानी से भी सावधानी बरतने की आवश्कता है।

कुम्भ : कुछ लोगों को साझेदारी के कार्यो में लाभ होगा। लाभकारी योजनाओं प्रति मन ललायित रहेगा। व्यर्थ की बातों को लेकर जीवन साथी से टकराव हो सकता है। कुछ लोगों के सम्बन्धों में मजबूती आयेगी जिससे उनके में एक आशा की किरण जगेगी।

मीन : इस सप्ताह कुछ लोग किसी अनहोनी की आशंका से ग्रस्त रहेंगे। यदि कहीं पर विवाद में फंसे हुए है। तो बाहर निकलना कठिन रहेगा। जरूरी कार्यो के प्रति ध्यान दें न कि और अपने काम से काम से रखेंगे तो बेहतर रहेगा।

पं० दीनानाथ तिवारी

देश का हर नागरिक हिंदू : भागवत

अगरतला में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कहा है कि भारत में रहने वाला हर व्यक्ति हिंदू है, वह चाहे मुसलमान ही क्यों न हो।

प्रतिक्रिया

१. मैं मोहन भागवत के उपरोक्त वक्तव्य से न तो सहमत हूं और न ही होना चाहिए कि देश का प्रत्येक नागरिक हिन्दू है।

२. देश का प्रत्येक नागरिक भारतीय–हिन्दुस्तानी या इन्डियन तो हो सकता है।

३. भारत में जन्में किसी भी धर्म सम्प्रदाय या मत को मानने वाले ही हिन्दू हो सकते हैं क्योंकि वे सभी पुर्नजन्म को मानते हैं– शवों को जलाते हैं– गो भक्त हैं और ओंकार की भक्ति करते हैं।

४. मुस्लिम, ईसाई, पारसी, यहूदी विदेशी धर्मावलम्बी हैं अतः ये हिन्दू नहीं हो सकते हैं। ये स्वयं को हिन्दू नहीं मानते हैं फिर आप उन्हें जर्बदस्ती हिन्दू क्यों मानते हो?

डा० गिरीश चन्द्र गुप्त, बुलन्दशहर
(पूर्व मंत्री नगर आर्य समाज)

श्रीमद्भगवत गीता

समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाज्जनः।
तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः।।

जो निरन्तर आत्मभाव में स्थित, दुःख –सुख को समान समझने वाला, मिट्टी, पत्थर और स्वर्ण में समान भाव वाला, ज्ञानी, प्रिय तथा अप्रिय को एक–सा मानने वाला और अपनी निन्दा–स्तुति में भी समान भाववाला है।।२४।।

मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः।
सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते।।

जो मान और अपमान में सम है, मित्र और वैरी के पक्ष में सम है एवं सम्पूर्ण आरम्भों में कर्तापन के अभिमान से रहित है, वह पुरुष गुणातीत कहा जाता है।।२५।।

मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते।
स गुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयाय कल्पते।।

और जो पुरुष अव्यभिचारी भक्तियोग के द्वारा मुझ को निरन्तर भजता है, वह भी इन तीनों गुणों को भलीभाँति लाँघकर सच्चिदानन्दघन ब्रह्मको प्राप्त होने के लिये योग्य बन जाता है।।२६।।

ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्य च।
शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य च।।

क्योंकि उस अविनाशी परब्रह्म का और अमृत का तथा नित्यधर्म का और अखण्ड एकरस आनन्द का आश्रय मैं हूँ।।२७।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 14 फरवरी से 20 फ़रवरी 2018 तक

अध्यक्षीय

संबंधों का नया अध्याय

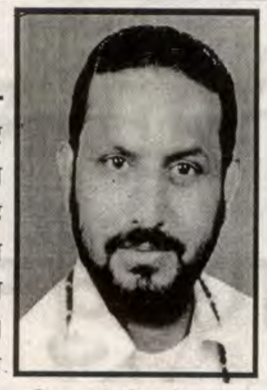

भारत के ६८वें गणतंत्र दिवस समारोह में बतौर अतिथि शामिल होने के लिए आसियान देशों के १० राष्ट्रप्रमुख भारत पहुंचे हैं। प्रधानमंत्री मोदी की हमेशा से कोशिश रही है कि वे अपने हर काम को, हर फैसले को कुछ अलग अंदाज में लोगों के सामने पेश करें। नतीजे चाहे जो रहें, लेकिन अंदाज का प्रभाव या उसकी चर्चा लोगों के बीच होती ही है। जब उन्होंने अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा को गणतंत्र दिवस में मुख्य अतिथि के रूप में बुलाया था, तब भी देश और दुनिया की निगाहें उनके इस कदम पर ठहरी थीं। इससे पहले प्रधानमंत्री बनने पर अपने शपथ ग्रहण समारोह में उन्होंने सार्क देशों के प्रमुखों को बुलाया था। इस कदम के जरिए यह संदेश देने की कोशिश की गई थी कि हम पाकिस्तान समेत अपने तमाम पड़ोसियों से अच्छे संबंध रखना चाहते हैं। हालांकि इन चार वर्षों में पड़ोसियों के साथ संबंधों में कहां कितनी मिठास और कहां कितनी कड़वाहट बढ़ी है, यह अलग चर्चा का विषय है। वैसे इस बार गणतंत्र दिवस पर आसियान देशों के प्रमुखों का आना अच्छी बात है। भारत तो अतिथि देवो भव की परंपरा को मानता है। और आसियान देशों के साथ हमारे संबंध आज के नहीं सदियों पुराने हैं। लुक ईस्ट की पालिसी हो या एक्ट ईस्ट की पालिसी, दोनों की मंशा अपने इन पुराने साथियों से संबंधों को प्रगाढ़ करने की ही रही है। आजादी के बाद भारत के पहले प्रधानमंत्री पं० नेहरू की वैश्विक नीति में इन देशों को खास तवज्जो दी गई थी। औपनिवेशिक दासता के अंधेरे के बाद आजादी के उजियारे में जब इन छोटे-छोटे देशों ने आंखें खोली तो प० नेहरू को अपने मार्गदर्शक के रूप में आगे पाया। इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्णो और मिस्र के शासनाध्यक्ष नासिर के साथ नेहरू ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन की नींव रखीं और उसी से आगे आसियान देशों को एकजुट होने की प्रेरणा मिली। यह दिलचस्प तथ्य है कि अभी दस आसियान देशों के शासनप्रमुख भारत के गणतंत्र दिवस में शामिल होने आए हैं, लेकिन भारत के पहले गणतंत्र दिवस समारोह के मुख्य अतिथि इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्णो थे और तब आसियान की नींव भी नहीं रखी गई थी। सुकर्णो के साथ नेहरूजी की दोस्ती सही अर्थो में औपचारिक दायरों से परे थी। यह जानना भी रोचक है कि पहली बार एक से ज्यादा अतिथियों को बुलाने की शुरूआत इंदिरा गांधी ने की थीं। उन्होंने १९६८ में सोवियत संघ के राष्ट्रपति अलेक्सेई कोसिगिन और यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति जोसेफ ब्रीज टीटो को एक साथ बुलाया था और फिर १९७४ में यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति टीटो के साथ ही श्रीलंका की राष्ट्रपति सिरिमाओ भंडारनायक के साथ में बुलाया था। दो अतिथियों से सीधे दस अतिथियों को इकठे बुलाकर मोदीजी ने इतिहास तो बनाया है। लेकिन इसकी सार्थकता तभी सिद्ध होगी, जब आसियान देशों के साथ हमारी दोस्ती हर मोर्चे पर सफल दिखे। फिलहाल प्रधानमंत्री मोदी इन देशों के प्रमुखों के साथ जो द्विपक्षीय वार्ताएं करेंगे, उनमें ज्यादा जोर आतंकवाद के विरोध, सुरक्षा और संपर्क बढ़ाने पर रहेगा। विशेषज्ञों का यह भी मानना है कि चीन जिस तरह अपनी आर्थिक और सैन्य ताकत का प्रदर्शन करता है, उसका जवाब देने के लिए आसियान देशों के साथ अपनी घनिष्ठता भारत को दिखाना जरूरी है। आसियान देशों के साथ भारत की इस रणनीति पर अमेरिका का प्रभाव भी हो सकता है। साउथ चाइना सी पर कब्जे की चीनी रणनीति को अकेले अमेरिका जवाब नहीं दे सकता है, उसे भारत की मदद की दरकार होगी और भारत को आसियान देशों खासकर वियतनाम, फिलीपींस आदि की। भारत–आसियान के २५ सालों के संबंध में व्यापार एक महत्वपूर्ण कारक रहा है। भारत–आसियान व्यापार और निवेश संबंध साल दर साल बढ़ रहे हैं। एक जुलाई २०१५ से सर्विस और इनवेस्टमेंट में कारोबार के लिए आसियान–भारत एग्रीमेंट प्रभाव में आया और अब वह भारत का चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बन चुका है। जानकारों का मानना है कि आसियान देशों के साथ शिखर बैठक भारत के लिये इन देशों के समक्ष व्यापार और संपर्क जैसे रणनीतिक क्षेत्रों में अपने आप को एक शक्तिशाली सहयोगी के तौर पर प्रस्तुत करने का बेहतर अवसर हो सकता है। आसियान देशों के साथ एक अहम पहलू सांस्कृतिक संबंधों का भी है। बकौल विदेश मंत्री सुषमा स्वराज केवल दो चीजें भारत और आसियान को जोड़ती है, एक बौद्ध धर्म और दूसरी रामायण। बौद्ध और हिंदू धर्म के अनुयायियों की बड़ी संख्या इन देशों में है। जिनके हितों की रक्षा करना इन देशों का दायित्व है। उम्मीद है आसियान देशों के साथ भारत की बातचीत में धार्मिक सहिष्णुता को भी तवज्जो दी जाएगी।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

एक देश, एक चुनाव का नया जुमला

बजट सत्र के शुरू होने पर संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने लोकसभा और विधानसभाओं का चुनाव साथ साथ कराने की बात उठाई। इसके लिए यह तर्क दिया कि बार–बार चुनाव कराने से विकास की गति में बाधा आती है, क्योंकि अधिकारियों को चुनाव कराने में लगाया जाता है जिससे उनका ज्यादा समय व्यर्थ होता है। उन्होंने यह विचार रखकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की बात को ही दोहराया है। उनसे पहले भी भाजपा नेता इस तरह के नए–नए प्रस्ताव लाते रहे हैं। देश में द्विदलीय प्रणाली होनी चाहिए, राष्ट्रपति प्रणाली होनी चाहिए और तो और भाजपा के बहुत से नेता संविधान के पुनर्लेखन की भी वकालत करते हैं। दरअसल यह संविधान ही है, जिसके कारण भारत में लोकतंत्र मजबूती से टिका हुआ है। संविधान लचीला है, लेकिन बात देश के संघीय ढांचे पर चोट करने की आए तो ढाल की तरह खड़ा हो जाता है। इस संघीय ढांचे में केंद्र और राज्यों के अधिकार अलग–अलग बंटे हुए हैं। वे मिलकर काम करेंगे, लेकिन हस्तक्षेप का अधिकार किसी को नहीं है। संविधान में ही निर्वाचित सरकार को पांच साल काम करने की इजाजत है और उसके बाद राजनीतिक दलों को फिर जनता के बीच जाना पड़ता है। अगर किसी सरकार से जनता का भरोसा उठता है और वह गिरती है, तो संविधान में मध्यावधि चुनाव की व्यवस्था है। यानी जनता फिर से अपने मत का इस्तेमाल करे और नई सरकार चुने। लेकिन भाजपा का एक देश, एक चुनाव का जो प्रस्ताव है वह संविधान की इन मूल भावनाओं के ही खिलाफ़ है। यह विचार दरअसल देश के संघीय ढांचे पर चोट करने वाला है। कांग्रेस नेता पीचिदम्बरम ने इसे चुनावी जुमला कहा है, तो सही ही कहा है। बोलने में जो चीज अच्छी लगे, वह व्यवहार में भी अच्छी हो, ऐसा नहीं होता। और देश कोई कविता तो है नहीं जिसमें तुकबंदियों से काम चलाया जाए। देश चलाना एक गंभीर जिम्मेदारी है, जिसमें सर्वोच्च प्राथमिकता इसकी संपूर्ण विविधताओं के साथ लोकतंत्र और संसदीय व्यवस्था को बनाकर रखने की होनी चाहिए। एक देश, एकचुनाव यह जुमला भी तकनीकी रूप से ठीक नहीं है। राज्यों में विधानसभा और केंद्र के लिए आम चुनाव होते हैं, तो इसे एक साथ लोकसभा और विधानसभा चुनाव कहना चाहिए। क्योंकि आम चुनाव एक होगा, लेकिन राज्यों के चुनाव तो अनेक होंगे। इस तकनीकी अड़चन के अलावा और भी कई बातें हैं, जिनसे यह विचार सिरे से गलत लगता है। इस विचार के समर्थकों का कहना है कि सरकारें समय–समय पर चुनाव के कारण आचार संहिता की अधीन हो जाती हैं और राजनीतिक दल हमेशा चुनाव के मूड में बने रहते हैं। यह एक व्यावहारिक दिक्कत है, लेकिन इसका समाधान भी व्यावहारिक होना चाहिए। इतने बड़े देश में अगर एक साथ आम चुनाव और विधानसभा चुनाव होंगे तो उसमें कितना वक्त लगेगा, यह विचार भी करना चाहिए। अभी कुछेक छोटे राज्यों को छोड़कर ज्यादातर राज्यों में दो से ज्यादा चरणों में चुनाव कराने पड़ते हैं। उत्तरप्रदेश में ही सात चरणों में चुनाव हुए। चुनाव आयोग जब पूरे देश में चुनाव कराएगा तो कितने चरणों में करा पाएगा। यह अनुमान भी लगाना होगा। क्या वे चुनाव साल भर चलेंगे और वोटों की गणना कब तक हो पाएगी। क्या साल भर चुनावी नतीजों का इंतजार किया जाएगा, चुनाव के वक्त अर्द्धसैनिक बलों की तैनाती सुरक्षा कारणों से करानी पड़ती है। जब एक साथ चुनाव होंगे तो इतना सैन्य बल कहां से आएगा। चुनाव आयोग ईवीएम और वीवीपैट की पुख्ता व्यवस्था क्या एक साथ करा पाएगा। चुनाव कराने के लिए कितने सरकारी कर्मचारी एक साथ तैनात किए जाएंगे और इस दौरान जो सरकारी कामकाज ठप्प पड़ेगा, उसकी भरपाई कैसे होगी। एक पल को मान लें कि मोदीजी अपने जादू से ये सारी व्यवस्था भी करवा देते हैं, तब भी देश की लोकतांत्रिक आत्मा को कैसे बचाया जाएगा चुनावों में केंद्र और राज्य के मुद्दे अलग होते हैं, भावनाएं अलग होती हैं, इनमें क्षेत्रिय दलों की खास भूमिका रहती है। अगर एक साथ चुनाव होंगे तो केंद्र यानी सत्तारूढ़ दल का प्रभाव इस विविधता पर हावी होगा, जो लोकतंत्र के लिए सही नहीं होगा। संविधान में संशोधन कर पंचायती राज व्यवस्था को मजबूत किया गया है। इस तरह सत्ता का विकेन्द्रीकरण किया गया है। लेकिन एक साथ चुनाव इस संवैधानिक दृष्टि के विपरीत जाता है और निरंकुश प्रवृत्तियों को मजबूत करता है। एक साथ चुनाव में यह समस्या भी रहेगी कि मान लें किसी राज्य में सरकार समय से पहले गिरती है या केंद्र में गठबंधन सरकार कार्यकाल पूरा न कर पाए, तब सत्ता किसके हाथ में रहेगी और दोबारा चुनाव कब और कैसे होंगे। सबसे बड़ी बात चुनावों में धन और समय की बबार्दी की चिंता करने के साथ संसद का समय बर्बाद करने की चिंता पर विचार क्यों नहीं किया जाता, आखिर चुनाव इसलिए ही होते हैं कि निर्वाचित जनप्रतिनिधि संसद, विधानसभाओं में बैठकर जनहित और देशहित के फैसले लें, नीतियां बनाएं। अभी तो ऐसा लगता है मानो औपचारिकता पूरी करने के लिए सत्र लगते हैं और बिना पूरी चर्चा के मनचाहे कानून बनाएं जा रहे हैं।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

डायबिटिक नैफ्रोपैथी के मरीजों के लिए चुनौतियाँ

डायबिटिक नैफ्रोपैथी गुर्दे की बीमारी है। यह मधुमेह का एक प्रकार है। जब छोटे रक्तवाहिकाओं को नुकसान होता है, तो दोनों गुर्दे मूत्र में प्रोटीन्स का बहाव शुरू कर देते हैं। यदि रक्तवाहिकाओं का नुकसान होना जारी रहे, तो धीरे–धीरे गुर्दे खून से अपशिष्ट उत्पादों को दूर करने की क्षमता खो देते हैं। डायबिटिक नैफ्रोपैथी किडनी का एक लगातार बढ़ते रहने वाला रोग है, जो किडनी की नसों में व्याधि के कारण होता है। ब्रिटिश डॉक्टर क्लिफोर्ड विल्सन ने (१९०६–१९९७) ने अपने जर्मन मूल के अमेरिकी डॉक्टर पॉल किमेल्स्टेल (१९००–१९७०) के साथ डायबिटीज नैफ्रोपैथी सिंड्रोम को खोजा था। सन् १९३६ में पहली बार इसका जिक्र किसी जर्नल में हुआ था।

यह बीमारी मधुमेह के ऐसे रोगियों में अधिक देखने को मिलती है, जिन्हें १५ वर्ष या उससे अधिक समय से डायबिटीज है। यानी आमतौर पर पचास से सत्तर वर्ष की उम्र के लोगों को यह बीमारी होने की आशंका होती है। यह बीमारी लगातार बढ़ती रहती है।

शुरूआती हमले के दो से तीन वर्ष के भीतर ही इसके कारण मरीज की मौत तक हो सकती है। महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में इस बीमारी से ग्रस्त होने की आशंका अधिक होती है। अमेरिका में किडनी फेल्योर और किडनी की भयंकर बीमारी के लिए डायबिटीक नैफ्रोपैथी सबसे सामान्य कारण है।

ऐसा नहीं है कि केवल एक प्रकार के डायबिटीज मरीजों को यह बीमारी अपनी गिरफ्त में लेती है। टाइप–१ और टाइप–२ दोनों प्रकार के मरीज इस बीमारी की चपेट में आ सकते हैं। अगर आप रक्त में ग्लूकोज की मात्रा को नियंत्रित करने का प्रयास नहीं करते हैं, तो यह बीमारी अधिक खतरनाक रूप से हमला कर सकती है। इसके साथ ही एक बार अगर यह बीमारी हो जाए, तो अनियंत्रित रक्तचाप रखने वाले मरीजों के लिए यह और खतरनाक हो जाती है। वे लोग जो हाई कोलेस्ट्रॉल के शिकार हैं, उनके लिए भी डायबिटिक नैफ्रोपैथी काफी खतरनाक हो सकती है।

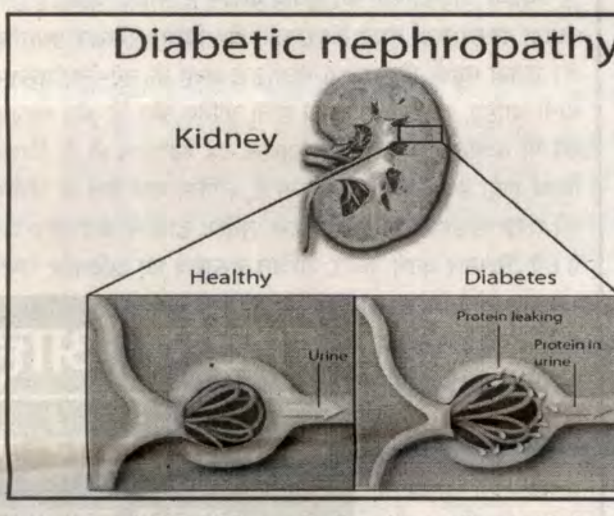

डायबिटिक नैफ्रोपैथी की पहली पहचान ग्लोमेर्युल्स (किडनी में मौजूद होता है, यहाँ रक्त परिष्करण का पहला पड़ाव होता है) में उमड़ता है। इस स्टेज पर किडनी पेशाब में अधिक मात्रा में सीरम का स्राव करने लगती है। इसकी पहचान के लिए संवेदनशील मेडिकल जाँच से की जा सकती है। समय के साथ–साथ यह समस्या और विकराल होने लगती है। इस दौरान गांठदार ग्लोमेरुलोस्केलेरोसिस ग्लोमेरुली को पूरी तरह नुकसान पहुँचा देता है। इसके बाद पेशाब में जाने वाले एल्बुमिन की मात्रा और बढ़ जाती है। इस दौरान किडनी के ऊत्तकों की जाँच से डायबिटिक नैफ्रोपैथी को आसानी से देखा जा सकता है। धीरे–धीरे यह समस्या गंभीर होती जाती है। किडनी फेल्योर का खतरा भी काफी बढ़ने लगता है। यहाँ तक कि डायलाइसीस और ट्रांसप्लांटेशन के बाद भी डायबिटीज के मरीजों की हालत अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक खराब होती है।

संभावित चुनौतियाँ

❖ हाइपोग्लाइसीमिया (इन्सुलिन का कम मात्रा में स्राव होना)

❖ क्रोनिक किडनी फेल्योर का खतरा

❖ किडनी रोग का अंतिम पड़ाव

❖ हायपरक्लेमिया

❖ किडनी प्रत्यारोपण से जुड़ी अन्य समस्याएँ

❖ संक्रमण का खतरा

डायबिटीज यूँ तो आम हो चली है, लेकिन यह बीमारी काफी खतरनाक होती है। सही जीवनशैली अपनाकर इस बीमारी को दूर किया जा सकता है। इसके साथ ही हमें अपने आहार पर भी नियंत्रण रखना चाहिए।

डायबिटिक नैफ्रोपैथी के लक्षण

आमतौर पर किडनी को नुकसान पहुँचने के कोई लक्षण नजर नहीं आते। यह परिस्थितियाँ धीरे–धीरे खराब होने लगती हैं। वास्तविकता यह है कि इस बीमारी के लक्षण नजर आने के पाँच से दस साल पहले से ही किडनी को क्षति पहुँचनी शुरू हो जाती है।

अधिकतर थकान महसूस होना

इस बीमारी से ग्रस्त मरीज को अधिकतर समय थकान का अहसास होता है। उसका किसी काम में जी नहीं लगता और न ही किसी काम को करने की ऊर्जा ही उसमें रहती है।

बीमारी का अहसास होना

डायबिटीक नैफ्रोपैथी के मरीज को यह लगता है कि वह बीमार है। उसे भीतर से अपनी तबीयत हमेशा नासाज ही नजर आती है। अपनी सेहत को लेकर वह पूरी तरह कभी आशांवित और सकारात्मक नहीं होता।

सिरदर्द की शिकायत रहना

सिरदर्द की शिकायत डायबिटिक नैफ्रोपैथी के मरीज को होने वाली एक आम शिकायत है। अगर आपको डायबिटीज है और आपके सिर में लगातार दर्द रहता है तो आपको डायबिटीज नैफ्रोपैथी की जाँच अवश्य करवानी चाहिए।

मतली और उल्टी की शिकायत

इस बीमारी के मरीजों को उल्टी की शिकायत भी परेशान करती है। क्योंकि इस बीमारी में गुर्दे सही प्रकार से काम नहीं करते, इसलिए मतली या उल्टी की शिकायत हो सकती है।

खराब हाजमा होना

खराब हाजमा भी डायबिटिक का एक लक्षण है। यूँ तो हाजमा कई कारणों से खराब हो सकता है, लेकिन डायबिटीज के मरीज की पाचन क्रिया अगर सही प्रकार काम नहीं कर रही हो और ऐसी समस्या लंबे समय तक बनी रहे, तो आपको बिना देर किए अपने डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए।

टाँगों में सूजन

इस बीमारी में अपशिष्ट पदार्थ साफ करने की गुर्दों की क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। ऐसे में शरीर में विभिन्न हिस्सों, विशेषकर टाँगों में सूजन आना आम बात है। डायबिटीज के मरीजों को चाहिए कि अगर उन्हें लंबे समय से यह बीमारी है और साथ ही अगर उन्हें अपनी टाँगों में सूजन की शिकायत है, तो उन्हें डायबिटिक नैफ्रोपैथी की जाँच करवा लेनी चाहिए।

पारिवारिक इतिहास

कुछ मामलों में, आपका पारिवारिक इतिहास भी मायने रखता है। डायबिटीज से पीड़ित हर व्यक्ति को किडनी संबंधी शिकायत भी नहीं होती। लेकिन, किसी के परिवार में अगर इस बीमारी का इतिहास रहा है, तो व्यक्ति को इस बीमारी से ग्रस्त होने की आशंका अधिक होती है।

धूम्रपान से होता है खतरा

डायबिटीज से ग्रस्त वे मरीज जो धूम्रपान करते हैं और वे लोग जिन्हें २० वर्ष की आयु से पहले टाइप–१ डायबिटीज हो गई थी, को किडनी की समस्याएँ होने का खतरा अधिक रहता है। अफ्रीकन–अमेरिकन, हिस्पेनिक और अमेरिकन इंडियन क्षेत्र के लोगों को भी किडनी के नुकसान होने का खतरा अधिक होता है।

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से सम्बन्धित सभी सिफारिशें अवश्य लागू की जाएं

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की एक कमेटी ने केन्द्रीय सरकार को अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के बारे में ६ सिफारिशें की है जो इस प्रकार हैः–

१. यह विश्वविद्यालय अन्य केन्द्रीय विश्वविद्यालयों की भांति ही माना जाए क्योंकि इसका पूर व्यय केन्द्रीय सरकार ही वहन करती है।

२. केन्द्रीय विश्वविद्यालय की शाखाएं नहीं खोली जा सकती हैं।

३. मुर्शिदाबाद–किशनगंज तथा मलपुरम में चल रही शाखाओं के निकटवर्ती विश्वविद्यालयों में विलीन कर दिया जाए।

४. भोपाल तथा पुणे में शाखाएं खोलने का विचार त्यागं दिया जाए।

५. कुलपति चयन में वही प्रक्रिया अपनाई जाए जो अन्यों में अपनाई जाती है।

६. विश्वविद्यालय में प्रशासन के लिए जो वर्तमान निजी नियम चल रहे हैं वे सभी हटाए जाएं और उनकी जगह वही नियम लागू किए जाएं जो अन्य सभी केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में लागू हैं।

पिछले ७० वर्षो में विभिन्न दलों की सरकारों ने तुष्टीकरण की नीति के सहारे विश्वविद्यालय को विभिन्न प्रकार की सुविधाएं तथा विशेषाधिकार दिए हैं। जिसका परिणाम यह निकला कि विश्वविद्यालय के अधिकारी वर्तमान सरकार के निर्देशों का पालन करने से इंकार कर देते है अतः ऐसी स्थिति में उपरोक्त सभी सिफारिशें अवश्य लागू की जानी चाहिए।

आई. डी. गुलाटी, बुलन्दशहर
सावरकरवाद प्रचार सभा

सन्ध्या ईश्वर की उपासना और अग्निहोत्र जड़-चेतन देवताओं की पूजा

मनमोहन कुमार आर्य

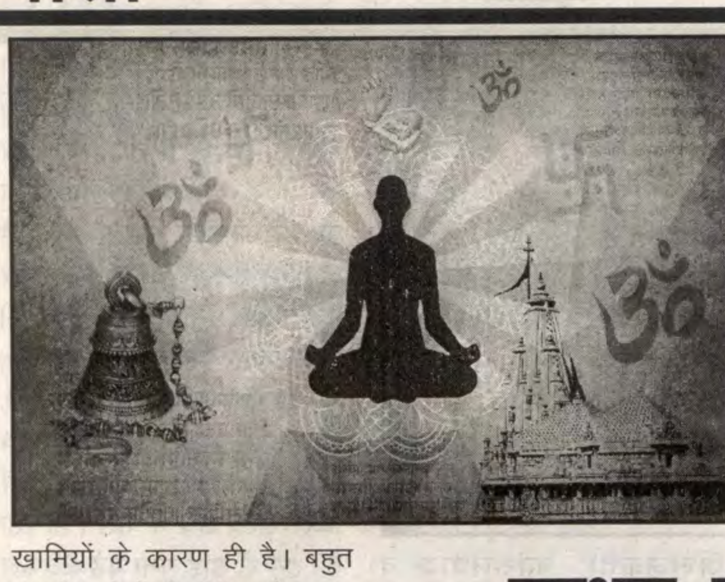

संसार में केवल तीन सत्तायें व पदार्थ ही हैं ईश्वर, जीव व सृष्टि। हमें मनुष्य जन्म भी ईश्वर से हमारे पूर्व जन्मों के अवशिष्ट कर्मों के फलों के भोग करने के लिए मिला है। हमारे जीवन में सुख व दुःख आते–जाते रहते हैं। धर्म वा धर्मानुकूल कर्मों का फल सुख व इसके विपरीत कर्मों व कार्यों का परिणाम दुःख होता है। मनुष्यों को तीन प्रकार के दुःख प्राप्त होते हैं। आधिदैविक, आधिभौतिक व आध्यात्मिक। अकाल, अतिवृष्टि, बाढ़, भूकम्प, अन्य प्राणियों तथा शारीरिक रोग ज्वर आदि से जो दुःख प्राप्त होते हैं, वह इन तीन श्रेणियों में आते हैं। हम सभी दुःखों से बचना चाहते हैं और हमारी भावना होती है कि हमें सभी प्रकार के सुख ही सुख प्राप्त हों, कोई दुःख कदापि प्राप्त न हो। संसार में हम अनेक मनुष्यों को ऐसे–ऐसे भयंकर दुःख भोगने पड़ते हैं जिनसे मन द्रवित व दुःखों से भर जाता है। करोड़ों की संख्या में हमारे देश में ऐसे लोग हैं जिन्हें दो समय का पेट भर भोजन भी सुलभ नहीं है, अच्छे स्वादिष्ट भोजन की बात तो बहुत दूर है। यह मुख्यतः देश की व्यवस्था की खामियों के कारण ही है। बहुत से लोग रोगों से पीड़ित हैं परन्तु वह धनाभाव व महंगी चिकित्सा के कारण डॉक्टर के पास जाने से भी डरते हैं और अकाल में मृत्यु का शिकार हो जाते हैं। अतः साधारण व मध्यम वर्गीय लोगों के दुःखों की कोई सीमा नहीं है। जीवन के अनेकानेक दुःखों से बचने के लिए ही ईश्वर के यथार्थ स्वरूप की वैदिक विधि से उपासना एवं धर्म का पालन करने का विधान है। सत्य बोलने, धर्म वा वेद विहित कर्मों को करने से मनुष्य को सुख की प्राप्ति होती है। अतः ऐसा करके अधिकांश व सभी दुःखों से बचा जा सकता है। इसके लिए हमें अच्छे संस्कारों व वेदों के अध्ययन की आवश्यकता है। वेदाध्ययन बाल व किशोरावस्था में किसी आर्य गुरुकुल में प्रविष्ट होकर किया जा सकता है। युवावस्था व बाद में वेदाध्ययन के लिए सत्यार्थप्रकाश धर्मग्रन्थ सहित ऋषि दयानन्द के अन्य ग्रन्थों व वैदिक साहित्य का अध्ययन कर सत्य वैदिक मान्यताओं व सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए हमारे मन व हृदय में ईश्वर, वेद व आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रति पूर्ण श्रद्धा होनी चाहिए। ऐसा करके व वैदिक शिक्षाओं, मान्यताओं व सिद्धान्तों के अनुसार आचरण करके हम अनेक प्रकार के दुःखों से मुक्त व प्रायः सुखी रह सकते हैं।

वेदों का अध्ययन करने से ईश्वर के सच्चे स्वरूप का ज्ञान भी अध्येता को होता है। ईश्वर का ज्ञान होने पर बोध होता है कि ईश्वर अनन्त काल से हम पर असंख्य उपकार करता चला आ रहा है। ईश्वर के उन उपकारों का ऋण हम कदापि नहीं चुका सकते। इसके लिए वेद और हमारे ऋषि–मुनि वैदिक मान्यताओं के अनुरूप ईश्वर के ध्यान व चिन्तन का विधान करते हैं जिसके अन्तर्गत मनुष्य को प्रातः व सायं की दो सन्धि वेलाओं में ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करनी होती है। इसे 'सन्ध्या' कहते हैं। इसमें सहायता के लिए ऋषि दयानन्द ने पंचमहायज्ञ विधि नाम से एक लघु ग्रन्थ की रचना की है जिसमें सन्ध्या का विधान व विधि दी गई है। इसे कोई भी हिन्दी जानने वाला मनुष्य कर सकता है। पंचमहायज्ञविधि की पद्धति से सन्ध्या कर ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन कर साधक वा मनुष्य ईश्वर की कृपा के रूप में सुख व कल्याण करने वाली प्रेरणायें प्राप्त कर सकता है। यह स्तुति, प्रार्थना व उपासना तथा ईश्वर का ध्यान व चिन्तन ही सच्ची ईश्वर की पूजा है। यह भी जानना चाहिए कि ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान व अविनाशी है। वह हमारे हृदय में स्थित हमारी आत्मा के भीतर व बाहर सर्वत्र विद्यमान है। यदि हम शरीर से बाहर ईश्वर को जान व मानकर उपासना करेंगे तो ईश्वर की प्राप्ति होना सम्भव नहीं है क्योंकि हमारी आत्मा शरीर के भीतर है। अतः ईश्वर की उपासना आत्मा द्वारा आत्मा के भीतर ही ईश्वर की अनुभूति करते हुए, उसका ध्यान व चिन्तन करते हुए करना ही सम्भव व लाभप्रद है। ऐसा करके ही स्तुति, प्रार्थना व उपासना के फल ईश्वर से प्रीति, ईश्वर के ध्यान से बुरी आदतों का छूटना व ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव के समान जीवात्मा के गुण, कर्म व स्वभाव का बनना होता है। इससे सर्वशक्तिमान ईश्वर के सहाय की प्राप्ति का होना भी सम्भव होता है। अतः सबको वेदाध्ययन व वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन करते हुए प्रातः व सायं सन्ध्या अवश्य करनी चाहिए जिससे जीवात्मा के दुर्गुण व दुःख आदि दूर होकर वह सदगुणों व सुखों से युक्त हो सके। सन्ध्या ही सच्ची व यथार्थ ईश्वर की पूजा है, यह विश्वास ईश्वर की पूजा व उपासना करने वाले मनुष्यों को दृढ़ता से होना चाहिए।

संसार की तीन मौलिक सत्ताओं में से एक जड़ प्रकृति है। यह हमारी सृष्टि का उपादान कारण है। इसी से ईश्वर ने यह भौतिक जगत बनाया है। इस जगत में अग्नि, वायु, जल, आकाश और पृथ्वी आदि ३३ देवता हैं। इन सब देवताओं से इतर उपासनीय केवल ईश्वर ही है। ईश्वर से इतर हमारे माता–पिता, आचार्य व उनके समान व्यक्तियों सहित ज्ञानी व विद्वान भी हमारे उपासनीय होते हैं। जड़ पदार्थों के यथार्थ गुणों को जानना, उनसे यथावत् उपयोग लेना व उनका अल्पज्ञानियों में उपदेश व प्रचार ही उन पदार्थों की स्तुति होती है। यह कार्य हमारे आचार्य और वैज्ञानिक भली प्रकार करते हैं। जड़ पदार्थों से प्रार्थना करने से न तो वह सुन सकते हैं और जब वह सुन ही नहीं सकते तो उस प्रार्थना का फल भी उनसे प्राप्त नहीं हो सकता। प्रार्थना तभी सार्थक व सफल होती है जब वह अपने से अधिक किसी सामर्थ्यवान चेतन सत्ता से की जाये। इसमें प्रथम स्थान पर तो ईश्वर ही है और इतर देवताओं में माता, पिता, आचार्य, बन्धुगणों सहित विद्वान आदि अनेक मनुष्य हो सकते हैं। अतः हमें ईश्वर से ही प्रार्थना करनी चाहिए जिससे वह सब पूरी हो सकें। जो प्रार्थनायें माता, पिता, आचार्यगण आदि पूरी कर सकते हैं, वह शेष पृष्ठ 11 पर

व्रतोत्सव प्रदर्शिका

चैत्र कृष्णपक्ष

व्रत, पर्व, त्यौहार (उत्सव)	तिथि	वार	दिनाँक
❖ इष्टिः, वसन्तोत्सव (१) होली, धुलैण्डी, गणगौर पूजारंभः (राज०),अभ्यड्गस्नानं, आम्रकुसुम प्राशनं, पंखा मेलाझज्जर, मेला आनन्द पुर साहिब (पंजाब), होली मेला रामधाम खेड़ापा (जोधपुर)	१	शुक्रवार	०२.०३.२०१८
❖ संततुकाराम जयन्ती, रडगजी मन्दिरोंत्सवारम्भः (वृन्दावन)	२	शनिवार	०३.०३.२०१८
❖ भद्रा १३:४३ से २५:०८ तक, कल्पा०	३	रविवार	०४.०३.२०१८
❖ चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय २१:५०, सोम शीतला पूजन, बासोड़ा, ऐश्वैसडे	४	सोमवार	०५.०३.२०१८
❖ श्री रडग पंचमी, भण्डारा छटीकरा	५	मंगलवार	०६.०३.२०१८
❖ भद्रा २६:०१ से, संतएकनाथषष्ठी मेल श्रीप्यारेजी रायपुर अटेरन (मुजफ्फरनगर), र०यो०, अ०स०सियो० २२:३३ से	६	बुधवार	०७.०३.२०१८
❖ भद्रा १४:५३ तक, शीतला पूजन, बासोड़ा मेलानाहरपुर (एटा), विश्वमहिला दिवस र०यो, स०सि०यो० २४:४४ तक	७	वीरवार	०८.०३.२०१८
❖ शीतलाष्टमी, श्री ऋषभदेव जयन्ती, केसरिया मेला मेवाड़, वर्षीतप प्रारम्भ, मेल कैलादेवी करौली (राज०), कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध, रंगजी रथोत्सव वृन्दावन	८	शुक्रवार	०६.०३.२०१८
❖ नवमी	६	शनिवार	१०.०३.२०१८
❖ भद्रा २१:५५ से, नौचन्दीमेला मेरठ	६	रविवार	११.०३.२०१८
❖ भद्रा ११:१४ तक, दशमाता व्रत	१०	सोमवार	१२.०३.२०१८
❖ पापमोचनी एकादशी व्रत सर्वेषाम,	११	मंगलवार	१३.०३.२०१८
❖ पंचक प्रारम्भ २८–०८, प्रदोषव्रत, मीन में सूर्य २३:४२, संक्रान्ति मु० ३०, बड़ व सौरमास चैत्रारम्भ, तेजीमंदी सूचकांक २७३३	१२/१३	बुधवार	१४.०३.२०१८
❖ भद्रा १७:२० से २६:४६ तक, रंगतेरस, वारूणीपर्व १७:११ से १७:२० तक, मास शिवरात्रि	१३	वीरवार	१५.०३.२०१८
❖ चतुदर्शी	१४	शुक्रवार	१६.०३.२०१८
❖ अन्वा, देवपितृकार्येऽमा, मन्वा० विश्वविकलांगदिवस, मेलाशनिशिंगणापुर,	३०	शनिवार	१७.०३.२०१८

जनसंख्या नियंत्रण पर कानून बनें

✍ विनोद कुमार सर्वोदय

यह सर्वविदित है कि हमारे प्रिय देश भारत में बढ़ती जनसँख्या एक भयानक रुप ले चुकी है? जिससे देश में विभिन्न धार्मिक जनसँख्या अनुपात निरंतर असंतुलित हो रहा है। इससे भविष्य में बढ़ने वाले अनेक संकटों का क्या हमको कोई ज्ञान है? क्या हम अपने अस्तित्व पर आने वाले संकट के प्रति सतर्क है? लोकतांत्रिक देश में चुनावी व्यवस्था के आधार पर राष्ट्र की राज्य व्यवस्था का गठन होता है और उसमें सम्मलित होने के लिए देश के समस्त नागरिकों को एक समान अधिकार होता हैं। कहने को यह एक सामान्य विषय बिंदू है। परंतु एक विशेष सम्प्रदाय के कुछ लोग निरंतर अपनी जनसँख्या बढ़ाते हुए देश में अनेक राष्ट्रीय व सामाजिक समस्याओं को बढ़ा रहें हैं। जबकि यह सत्य किसी से छिपा नही है कि जब १९४७ में पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्रो में मुस्लिम बहुसंख्यक हुए तो देश का विभाजन हुआ था। इस प्रकार जनसंख्या बल के दुष्प्रभाव व तत्कालीन राजनीति से धर्म के आधार पर देश विभाजित हुआ। लेकिन क्या वह स्थिति पुनः बनें उससे पूर्व ऐसे षडयंत्रकारियों के प्रति सावधान होना आवश्यक नही होगा? क्या यह अनुचित नही कि जहां जहां मुस्लिम संख्या बढ़ती जाती हैं वहां वहां उनके द्वारा साम्प्रदायिक दंगे भड़काने से वहां के मूल निवासी पलायन करने को विवश हो जाते हैं? तत्पश्चात वहां केवल मुस्लिम बहुल बस्तियां होने के कारण उनमें अनेक अलगाववादी व आतंकवादी मानसिकता पनपने लगती हैं।

इसके अतिरिक्त अधिकांश कट्टरवादी मुस्लिम समाज लोकतांत्रिक चुनावी व्यवस्था का अनुचित लाभ लेने के लिए अपने संख्या बल को बढ़ाने के लिये सर्वाधिक इच्छुक रहते हैं। तभी तो अधिकांश मुस्लिम बस्तियों में यह नारा लिखा हुआ मिलता है कि जिसकी जितनी संख्या भारी सियासत में उसकी उतनी हिस्सेदारी। जनसंख्या के सरकारी आकड़ों से भी यह स्पष्ट होता रहा हैं कि हमारे देश में इस्लाम सबसे अधिक गति से बढ़ने वाला संप्रदाय धर्म बना हुआ हैं। इसलिए यह अत्यधिक चिंता का विषय है कि ये कट्टरपंथी अपनी जनसंख्या को बढ़ा कर स्वाभाविक रुप से अपने मताधिकार कोष को बढ़ाने के लिए भी सक्रिय हैं। इसको **जनसंख्या जिहाद** कहा जाये तो अनुचित न होगा क्योंकि इसके पीछे इनका छिपा हुआ मुख्य ध्येय हैं कि हमारे धर्मनिरपेक्ष देश का इस्लामीकरण किया जाये।

निसंदेह विभिन्न मुस्लिम देश टर्की, अल्जीरिया, टयूनीशिया, मिस्र, सीरिया, ईरान, यू.ऐ.ई., सऊदी अरब व बंग्लादेश आदि ने भी कुरान, हदीस, शरीयत आदि के कठोर रुढ़ीवादी नियमों के उपरांत भी अपने अपने देशों में जनसंख्या वृद्धि दर कम करी है। फिर भी विश्व में भूमि व प्रकृति का अनुपात प्रति व्यक्ति संतुलित न होने से पृथ्वी पर असमानता बढ़ने के कारण गंभीर मानवीय व प्राकृतिक समस्याएं उभर रही है। सभी मानवों की आवश्यकता पूर्ण करने के लिए व्यवसायीकरण बढ़ रहा है। बढ़ती हुई जनसंख्या संसाधनों को खा रही है। औद्योगीकरण होने के कारण प्रदूषण बढ़ रहा है व बढ़ती आवश्यक वस्तुओं की मांग पूरी करने के लिए मिलावट की जा रही है। जिससे स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं बढ़ रही है। इसके अतिरिक्त वायु प्रदूषण, कूड़े–कर्कट के जलने पर धुआं, प्रदूषित जल व खादय–पदार्थ, घटते वन व चारागाह, पशु–पक्षियों का संकट, गिरता जल स्तर व सूखती नदियां, कुपोषण व भयंकर बीमारियां, छोटे–छोटे झगड़ें, अतिक्रमण, लूट–मार, हिंसा, अराजकता, नक्सलवाद व आतंकवाद इत्यादि अनेक मानवीय आपदाओं ने भारत भूमि को विस्फोटक बना दिया है। फिर भी जनसंख्या में बढ़ोत्तरी की गति को सीमित करने के लिए सभी नागरिकों के लिए कोई एक समान नीति नही हैं । प्राप्त आकडों के अनुसार हमारे ही देश में वर्ष १९९१, २००१ और २०११ के दशक में प्रति दशक क्रमशः १६.३, १८.२ व १६.२ करोड़ जनसंख्या और बढ़ी है। जबकि उपरोक्त वृद्धि के अतिरिक्त बांग्लादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान और म्यांमार आदि से निरंतर आने वाले घुसपैठिये व अवैध व्यक्तियों की संख्या भी लगभग ७ करोड़ होने से एक और गंभीर समस्या हमको चुनौती दे रही है।

इसके अतिरिक्त विभिन्न समाचारों से प्राप्त कुछ आंकड़े व सूचनाओं के अनुसार ज्ञात होता हैं कि जनसांख्यकीय घनत्व के बिगड़ते अनुपात के बढ़ने से भी ये विकराल समस्याएं बहुत बड़ी चिंता का विषय बन चुकी है। सम्पूर्ण विश्व के १४६ करोड़ वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में भारत का क्षेत्र मात्र २.४ प्रतिशत हैं जबकि हमारी पूण्य भूमि पर विश्व की कुल जनसँख्या लगभग ७.५ अरब का १७.६ प्रतिशत बोझ है। आज हमारे राष्ट्र की कुल जनसँख्या १३४ करोड से अधिक हो चुकी है और जो चीन की लगभग १३८ करोड जनसँख्या के बराबर होने की ओर बढ़ रही है। जबकि पृथ्वी पर चीन का क्षेत्रफल हमसे लगभग ३ गुना अधिक है तो इस प्रकार हम ४०२ व्यक्तियों का बोझ प्रति वर्ग किलोमीटर वहन करते है जबकि चीन में उतने स्थान पर केवल १४४ व्यक्तियों ही रहते है। इसी प्रकार पाकिस्तान में २६०, नेपाल में १९६, मलेशिया में ६७, श्रीलंका में ३२३ एवं तुर्की में मात्र ६७ व्यक्तियों का प्रति वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में पालन हो रहा है। हम से ढाई गुना बडे क्षेत्रफल वाले आस्ट्रेलिया की जनसंख्या जितनी ही संख्या प्रति वर्ष हमारे देश में बढ़ रही हैं।

अतः भविष्य में आने वाली पीढ़ियों को शांति, स्वस्थ व सुरक्षित जीवन के साथ साथ समाजिक सदभाव एवं सम्मानित जीवन जी सके इसलिये हम सब राष्ट्रवादी चिंतित हो रहें हैं। इन चिंताओं के निवारण व देश के धर्मनिरपेक्ष स्वरुप को बचायें रखने के लिए आज की प्रमुख आवश्यकता है कि सभी नागरिकों के लिए एक समान **जनसंख्या नियंत्रण कानून** बनना चाहिए। इस विकराल राष्ट्रीय समस्या के समाधान के लिए क्रांतिकारी युवा सन्यासी यति नरसिंहानंद सरस्वती जी प्रधानमंत्री व सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को अपने सैकड़ों–हजारों अनुयायियों के साथ देश के विभिन्न भागों में जा जा कर पिछले लगभग दो वर्षों से निरंतर रक्त से पत्र लिखकर एक समान **जनसंख्या नियंत्रण कानून** बनवाने की मांग कर रहें हैं। अखिल भारतीय संत परिषद के राष्ट्रीय संयोजक यति नरसिंहानंद सरस्वती जी विभिन्न जनपदों के मुख्यालय पर वहां के जनपद अधिकारी के माध्यम से रक्त से लिखें ज्ञापन को शासन के संबंधित अधिकारियों को भिजवाते हैं। साथ ही यति महाराज जी की प्रेरणा से अनेक राष्ट्रवादियों ने भी इस राष्ट्रीय समस्या के समाधान के लिए अपने अपने स्तर से कार्यक्रम आरम्भ किये हैं। देश का प्रमुख राष्ट्रवादी समाचार चैनल जो राष्ट्रीय व हिंदुत्व संबंधित समस्याओं पर अनेक वर्षो से समाज को जागरुक करता आ रहा हैं ने भी हम दो–हमारे दो–तो फिर सबके दो के नारे के साथ इस अभियान को आगे बढ़ाने का निश्चय करके सभी राष्ट्रवादियों का उत्साहवर्धन किया हैं। पिछले दिनों लोकसभा में भी सत्तारुढ़ भाजपा के सांसदों ने भी जनसंख्या नियंत्रण के लिए कठोर नीति बनाने की मांग के साथ इसके लिए एक मंत्रालय भी बनाने का आग्रह किया हैं। इसमें मुख्य रुप से सहारनपुर के सांसद श्री लखनपाल, श्री रवींद्र कुमार राय व श्री निशिकांत दुबे ने बढ़ती मुस्लिम जनसंख्या पर चिंता जताई और सांप्रदायिकता से अलग हट कर **जनसंख्या नियंत्रण कानून** की आवश्यकता को राष्ट्रीय हित में सभी के लिये आवश्यक माना हैं। पिछले दिनों अलवर (राजस्थान) के भाजपा विधायक श्री बनवारी लाल सिंहल ने सुदर्शन समाचार चैनल के अभियान को आत्मसात करते हुए अपनी पीड़ा को व्यक्त करते हुए फेसबुक पर स्पष्ट किया कि जब एक समुदाय अधिक बच्चे पैदा करके बहुसंख्यक होने की ओर बढ़ रहा है तो हिंदुओं को भी उन्हें काउंटर करने के लिए अधिक बच्चे पैदा करने चाहिये। उन्होंने एक प्रमुख राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र को भी यही दोहराया, साथ ही विधायक जी ने एक सच्चाई और व्यक्त करी कि राजस्थान के अलवर व भरतपुर में एक समुदाय विशेष के लोग अधिक पैसा हथियारों की खरीद पर व्यय करते हैं जबकि हिन्दू आधुनिक जीवन जीने में। वैसे यह कहना अनुचित नही होगा कि ऐसे समाचार प्रायः देश के अधिकांश क्षेत्रो से आने के कारण यह भी एक राष्ट्रव्यापी समस्या हैं।

आज विज्ञानमय आधुनिक युग में जब विश्व के अनेक देशों में जनसंख्या नियंत्रण के लिए आवश्यक कानून बनें हुए हैं तो फिर हमारे देश में ऐसा कानून क्यों न बनें? अतः अधिक से अधिक लोगों को लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुसार इस अभियान से जुड़ कर अपने अपने क्षेत्रीय सांसद व विधायक से संपर्क करके इस विकराल समस्या के समाधान के लिए शेष पृष्ठ 10 पर

केन्द्रीय विद्यालयीय पाठ्यक्रमों में इस्लामिक आक्रान्ताओं का महिमा मण्डन क्यों?

मानवेन्द्र नाथ पंकज

बाबा फरीद, ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती या अन्य सूफी रहस्यवादियों ने किस तरह हिन्दुओं को मूर्तिपूजा के दुष्परिणामों से सचेत किया? इस्लाम के अल्लाह व निर्गुण ब्रह्म की उपासना ने मानव जाति का कैसे भला किया? मूर्तिपूजकों के कारण मध्ययुगीन भारत में क्या–क्या आपदाएं आईं?

उपर्युक्त प्रश्नों के

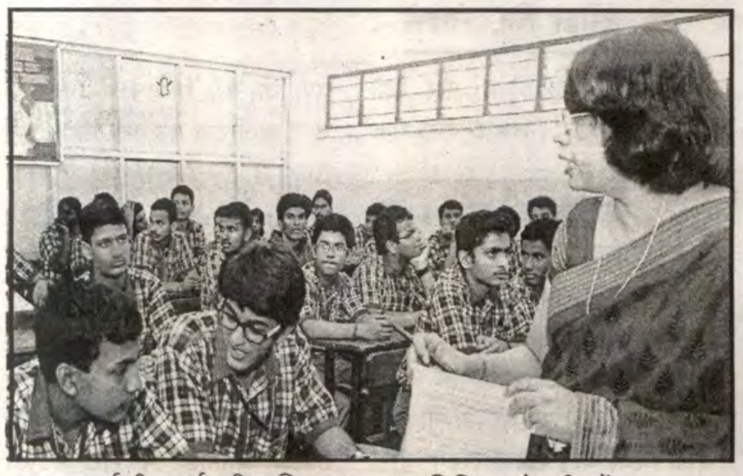

उत्तर आईसीएसई की इतिहास व नागरिक शास्त्र की स्वीकृत पुस्तक जो के. एस. रंधावा द्वारा लिखित एवरग्रीन पब्लिकेशन (इण्डिया) प्रा. लि. द्वारा सन् २०१६ से २०१६ तक चार संस्करण प्रकाशित कर चुकी है, के सूफियों से संबंधित अध्याय में मांगे गए हैं।

उक्त जानकारी देते हुए अध्येता स्तम्भकार हरिकृष्ण निगम ने हमें दो लेख–'सन् २०१६ और २०१७ व तत्पश्चात् नए पाठ्यक्रम सरकार द्वारा स्वीकृतः निर्लज्जता की अंतिम जीत' तथा 'सूफियों को भक्ति कवियों को प्रेरक क्यों कहा जा रहा है?, प्रेषित किया है। खोजपरक जानकारी बताती है–

दो बड़े आकार की पुस्तकें हैं– पहली, हिस्ट्री, एण्ड सिविक्स (फ्रैंक माडर्न सर्टीफिकेट), इस १६६ रंगीन चित्रों सहित बड़े आकार सुचरिता बसु द्वारा लिखी पुस्तक मैकमिलन इण्डिया प्रा. लिमिटेड द्वारा सन् २०१५ में प्रकाशित हुई है जिसके पिछले ४ वर्षों में ४ संस्करणों द्वारा लाखों प्रतियां छप चुकी हैं। इस पुस्तक के अध्याय व चित्र विकीपीडिया से उद्धृत किए गए है और श्रोतों व लेखकों के ३० नामों में से कुछ अपरिचित से भी हैं।

फ्रैंक माडर्न सर्टीफिकेट की सातवीं कक्षा की सुचरित बसु कृत उपर्युक्त 'हिस्ट्री एण्ड सिविक्स' कुछ सचित्र अध्यायों के शीर्षक व विषयवस्तु की झलक आँखें खोलने योग्य है। ''तुर्की आक्रमण'' शीर्षक अध्याय में लगभग दो पृष्ठ गजनी के महमूद और दो पृष्ठ ही मोहम्मद गोरी के ऊपर हैं। दो–तीन पैराग्राफ में परिचयात्मक टिप्पणी देने के बाद कि वह २७ वर्ष की आयु में ६६८ सी. ई. में गद्दी पर बैठा व कश्मीर, पंजाब व ईरान के बड़े हिस्सा अपने साम्राज्य में जोड़ सका था, भारतीय उपमहाद्वीप की उसकी विजय उसकी सूझबूझ, प्रशासनिक क्षमता व संगठन क्षमता के उसके द्वारा जीते भारतीय मानचित्र में एक नया इतिहास बनाने वाले।

उसके द्वारा किए गए नरसंहार व विनाश पर एक शब्द भी नहीं लिखा गया है। सिर्फ जियोग्राफी स्किल बिल्डर शीर्षक से उसके द्वारा जीते क्षेत्र, पर्वतों व नदियों का ही जिक्र है, उसके सफल अभियानों का जिक्र है। उसके कीर्तिमानों पर लगभग २००० शब्द सचित्र दिए गए हैं।

इसी तरह मोहम्मद गोरी जो गजनी का ही शासक था वही ११७३ सी. ई. में वह कैसे सुल्तान बना और उसने अपने साम्राज्य को मध्य अफगानिस्तान, लाहौर व पंजाब को अपनी सीमाओं की राजधानियां बना सका। इसका और ११ ६१ और ११६२ के तराई के युद्ध में उसने कैसे वीरता दिखाकर पृथ्वीराज चौहान को हराया, इसका ही जिक्र है। इसके बाद तुर्की के आक्रमण की सफलता पर पृष्ठ है और फिर कम्प्यूटरकृत दोनों के विश्लेषण का एक 'माइंड मैप' है। हिन्दू प्रतिरोध, पृथ्वीराज चौहान का संघर्ष व बलिदन व त्याग विषयक सामग्री इस इतिहास पुस्तक में एक पंक्ति भी नहीं है। विश्वास नहीं होता कि हमारे विद्यार्थी सन् २०१६ या आगे के वर्षों में इससे अधिक जानकारी के हकदार नहीं होंगे!

जैसा ऊपर इंगित किया गया है आई. सी. एस. ई. की इतिहास और नागरिक शास्त्र की स्वीकृत पुस्तक जो के. एस. रंधावा द्वारा लिखित व एवरग्रीन पब्लिकेशन इण्डिया प्रा. लि. द्वारा सन् २०१० से सन् २०१६ तक चार संस्करण प्रकाशित कर चुकी है, सूफियों से संबंधित भ्रमित करने वाले तथ्य प्रस्तुत करती है।

१५० पृष्ठों की इस बड़े आकार की पुस्तक का मूल्य रु. २२० है। इसके अनुसार इस्लाम के भीतर सूफियों का सुधार आंदोलन स्वतंत्र चिंतन के लिए देश की एक महत्वपूर्ण उदारवादी विचारधारा रही है। ये मिस्टिक्स थे और १०–११ वीं शताब्दी में पर्शिया से आए थे और मानवजातियों के बराबरी के सिद्धान्त के प्रवक्ता थे चाहे वे हिन्दू या मुस्लिम या और कोई भी हों। ईश्वर एक है और उससे प्यार करना जरूरी है। इस मान्यता से उन्होंने हिन्दू–मुस्लिम खाईं को पाटने में मदद की। संगीत और ध्यान ही उनके वीरों के अनुसार ईश्वर को पाने का रास्ता है।

अजमेर के ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती का मकबरा या उनकी मजार आज भी भारत में सूफियों का गढ़ माना जाता है। उनका जन्म मध्य एशिया में हुआ था और वे लगभग सन् ११६२ में भारत आकर अजमेर में बस गए थे। चिश्ती सम्प्रदाय के संस्थापक के रूप में उनके अनुयायी दूर–दूर से आते हैं।

इस पुस्तक के अनुसार बाबा फरीद दूसरे बड़े सूफी थे जो अजोधाम में रहते थे। इसके अतिरिक्त दूसरे प्रसिद्ध सूफियों में सैयद मोहम्मद गेनूदराज गुलबर्गा, शाह आलम बुखारी (गुजरात), बहाउद्दीन जकरिया, मुलतान, शेख शहबुद्दीन, सिलहट और मकदूम शाह की मजार (माहिम) रहे हैं।

दावा यह भी किया गया है कि इन सबने भक्ति मार्ग के संत कवियों को प्रभावित किया जिससे उन्हें निर्गुण उपासना को प्रचारित करने में सहायता मिली। वे भूल जाते हैं कि मध्ययुगीन भारत में भक्तिमार्ग में शंकराचार्य, माधवाचार्य, वल्लभाचार्य, रामानुज, चैतन्य महाप्रभु, रामानंद, रैदास, सूर, तुलसी, रहीम, रसखान आदि ने स्वतंत्र रूप से करोड़ों हिन्दुओं का मार्गदर्शन किया था और वे शायद ऊपर लिखे सूफी सुधारकों के बारे में जानते भी नहीं थे। मजे की बात यह है कि उपर्युक्त अनुमोदित पाठ्यक्रम की पुस्तकों में स्वाध्याय या अभ्यास के लिए अध्याय के अंत में जो प्रश्न व उनके संभावित उत्तर भी दिए जाते हैं, वे हिन्दूविद्वेषी ही प्रतीत होते हैं।

समीचीन होगा यदि केन्द्र सरकार केन्द्रीय विद्यालयीय पाठ्यक्रमों में इतिहास का विद्रूपीकरण करने वाले लोगों को जिम्मेवारी सुनिश्चित कर उन्हें बाहर का रास्ता दिखाए। ऐसा लगता है कि इरफान हबीब, रोमिला थापर जैसी हिन्दू विद्वेषी तथाकथित इतिहाकार इन पाठ्य सामग्री को तैयार करने वाले से जुड़े हैं!

सवाल यह है कि इस्लामिक आक्रांताओं व उनके लिए रास्ता बनाने वाले सूफियों का पाठ्यक्रम में समावेश क्या भारत की आत्मा को नेस्तनाबूत करने का षडयन्त्र नहीं है? भक्ति आंदोलन, स्वातन्त्र्य संग्राम व हिन्दू शासन के मानबिंदुओं का पाठ्यक्रमों में समावेश जहां एक ओर भावी पीढ़ी को अपने गौरवमयी अतीत से जोड़ेगा, वहीं दूसरी ओर राष्ट्र के प्रति उनमें समर्पण भाव जगाएगा। यक्ष प्रश्न है कि क्या केन्द्र सरकार सेक्युलरिज्म की प्रेत छाया से अपने को मुक्त कर पाएगी?

पुणे का शनिवारवाड़ा

✍ रमेश जि. नेवसे

(शेष पिछले अंक का)

अंग्रेज व्यापारी के रूप में शिवकाल के पहले से ही आये थे। लेकिन उन्होंने हिंदुस्थान में फैली हुई जातीयता, कपटजाल, एक–दूसरे की टाँगें स्वार्थ के लिए खिंचने, स्वार्थ के लिए अपने ही रिश्तेदारों का गला घोंटने की आदत और उसके लिए अपने शत्रु को ही न्योता देने की परंपरा उनके ध्यान में आने के बाद उन्होंने तोड़–फोड़ की राजनीति करके हिंदुस्थान के एक–एक राजा को और उसके राज्य को अपने कब्जे में लेते लेते उन्हें निष्काम और पराक्रमहीन बनाया। सिर्फ नाना फडणवीस अपनी बुद्धिमत्ता से उनकी हर चाल को नाकाम बनाता था और मराठा राज्य अंग्रेजों से बचाता था। लेकिन अंग्रेजों के शिकंजे में छोटे–छोटे सरदार आने के बाद बड़े सरदारों की मछलियाँ स्वार्थ और अंग्रेजों की कुशल राजनीति से जाल में फँसती गयी। पेशवे आखिरकार अकेले रह गये। कुछ गिने–चुने सरदार ही उनके इर्दगिर्द रह गये थे।

व्यापारी अंग्रेज चालबाज थे। लुटेरे थे और उतने ही बेईमान थे। अपनी जालसाजी से बाजीराव की पूरी नाकाबंदी करके उसे अपने शिकंजे में फँसाया। व्यापार के बजाय वे ज्यादातर राजनीति ही करने लगे थे। उनका मकसद पुणे पर अंग्रेजों का झंडा लहराना ही था। वे मौकापरस्त थे। मौका आते ही मौके का फायदा उठाने में माहिर थे। पूरे पुणे में और शनिवारवाडे में उन्होंने पैसा बहाकर अपने जासूसों का जाल फैलाया था। इसी बिकाऊ और गद्दार लोगों की वजह से मराठी सल्तनत के गले में अंग्रेजों का फंदा पड़ गया था। पराक्रमी, शूर, बुद्धिमान और सियासी रेसिडेंट एलफिस्टन मौके की तलाश में था।

बाजीराव पेशवे ने अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध का ऐलान करने के बाद उसने शनिवारवाडा छोड़ दिया। पेशवा पर्वती टिले के महल में रहने लगा। पेशवाओं के सेनापति बापू गोखले ने दोपहर के समय मुला और मुठा नदी के संगम पर बसा एलफिस्टन के बंगले को भस्म कर दिया। एलफिस्टन ने लिखे अनेक दस्तावेज जलकर राख हो गये। अंग्रेजों की फौज बेतहाशा वहाँ काटी गयी। एलफिस्टन संगम से भागकर खडकी जा रुका। वहाँ उसने डेरा जमाया। भगोड़ा बाजीराव, अपनी पत्नी और रिश्तेदारों के साथ अपने सैनिकों की वीरता और पराक्रम पर्वत के टिले से दुनाली की दुर्बिण से देख रहा था।

अगले आठ दिनों में पुणे के आसपास अंग्रेजों के साथ छुटपुट की तलवारबाजी होती रही। आखिरकार १६ नवंबर १८१७ में येरवडा के मैदान अंग्रेज और मराठों के बीच घमासान युद्ध हुआ। यह निर्णायक युद्ध था, पूरे हिंदुस्थान में अपनी वीरता

का झंडा फहराने वाले मराठे आपसी झगड़े के कारण इस युद्ध में परास्त हुए। दूसरा बाजीराव अंग्रेज शत्रु से बचने के लिए अपने ही राज्य में भाग रहा था। नियती का एक अजब तमाशा लोगों को देखने को मिल रहा था।

प्रथम बाजीराव के तलवार के आतंक से शत्रु भयभीत होकर भागता था, वह आखिरी दम तक अपराजित सेनानी रहा था। उसने मराठी सल्तनत का भगवा झंडा पूरे हिंदुस्थान में बड़े शानो–शौकत से फहराया था। तो दूसरा बाजीराव खुद को बचाने के लिए भाग रहा था। भगोड़े बाजीराव को अंग्रेजों ने एक जगह टिकने नहीं दिया। बाजीराव का पीछा अंग्रेजों ने जारी रखकर आखिरकार उसको खानदेश में धूळकोट नामक गाँव में ३ जून १८१८ को कैद किया और हर साल ८ लाख रुपयों की तनख्वाह देकर उसके सारे अधिकार छीनकर उसे गंगा किनारे बसे ब्रह्मावर्त में नजरकैद में रखा।

ब्रह्मावर्त में बाजीराव ने अपना छोटा सा राज्य निर्माण किया। अंग्रेजों का एक ऑफिसर उसके ऊपर नजर रखने और अंग्रेज शासन का वकील के अधिकार से नियुक्त किया गया था। अंग्रेजों ने अपने अनेक सिपाही पेशवे राज्य की निगरानी के लिए रखे थे। ब्रह्मावर्त में बाजीराव पूजापाठ, दानधर्मा, मंदिरों में जाकर दर्शन लेना और बचा हुआ समय ऐय्याशी में गुजारा करता था। आखिर ७६ साल की उम्र में अंग्रेजों की कैद में ही उसकी मृत्यु हुई। उसका अंतिम संस्कार ब्रह्मावर्त के किनारे किया गया।

दूसरा बाजीराव अपना वंश बढ़ा नहीं सका। पेशवा को पूरा खानदान नष्ट हुआ। दूसरे बाजीराव ने ब्रह्मावर्त में एक पुत्री को जन्म दिया था। उसके विरासत के लिए पुत्र नहीं था। उसने दत्तक लेना चाहा था लेकिन अंग्रेजों ने यह प्रस्ताव मंजूर नहीं किया। पुणे के पेशवे और उनका भट खानदान आम आदमी के लिए, इतिहास के पन्नों से ओझल हो गया।

शनिवारवाडे से १६ नवम्बर १८१७ के दिन दूसरा बाजीराव अपने सगे–संबंधियों के साथ जवाहरात, पैसा, सोना, चांदी और कुल गहने लेकर निकला और उसने हमेशा–हमेशा के लिए शनिवारवाडे से विदाई ली। क्योंकि अब उसे अपने सरदारों के ऊपर से विश्वास उठ गया था। इसका कारण यह था कि, अनेक सरदारों ने अपनी–अपनी जागीर सुरक्षित रखने के लिए अंग्रेजों के साथ समझौते किये थे। पेशवाओं के और मराठा राज्य के साथ अपने स्वार्थ के लिए पूरी तरह गद्दारी की थी। पेशवे अब सिर्फ नाम के रह चुके थे। १७ नवम्बर १८१७ को शनिवारवाडा अंग्रेजों ने अपने कब्जे में कर लिया।

दूसरे बाजीराव ने अपने कार्यकाल में शनिवारवाडे में अपने ऐय्याशी के लिए 'अस्मानी महल' नामक सुंदर हवेली बनवाई थी। अपने भाई चिमणराव और दत्तक भाई अमृतराव के लिए अलग–अलग महल बनवाये थे। पहले बाजीराव की दूसरी पत्नी तथा समशेर की माँ मस्तानी के लिए बाजीराव ने जो महल वाडे के ईशान्य दिशा में बनवाया था, उसे इस द्वितीय बाजीराव ने तहसनहस कर दिया और वहाँ बगिचा बनवाया। उसके पीछे एक राजनीति थी।

मस्तानी को पुणेकर और ब्राह्मण लोग मुसलमान मानते थे। लेकिन बाजीराव ने घर–गृहस्थी के लिए मस्तानी का महल अपने धर्मपत्नी के महल के बगल में ही बनवाकर उसे अपनी पत्नी का दर्जा दिया था। रखैल रखने वाला आम आदमी घर गृहस्थी के नाते अपने संसार में अंगार नहीं डालते। एक म्यान में दो समशेर नहीं रखी जाती। इसलिए उसने मस्तानी को महल अलग देकर बाजीराव ने मस्तानी के प्रति अपना प्यार और कर्तव्य जताया। बाजीराव को मस्तानी से जो पहली संतान प्राप्त हुई उसका उपनयन संस्कार शनिवारवाडे में ही करके उसे अपना वंश माना था। (उपनयन–अधिकृत ब्राह्मण होने के लिए किये जाने वाला धार्मिक संस्कार) इसी समशेर बहाद्दर के पोते अलिजाबहाद्दर मस्तानी महल में अपने घरवालों के साथ रहते थे।

नारायणराव का कत्ल हुआ था, उस वक्त हमलावरों ने राघोबा दादा से ज्यादा से ज्यादा पैसा उगलवाने के लिए धमकाते हुये कहा था कि 'अगर मुँह मांगी रकम नहीं दी, तो वो अलिजाबहाद्दर को पेशवा के रूप में गद्दी पर बिठाएँगे। क्योंकि उसके रगों में पेशवे घराने का खून बहता है।' इस प्रसंग से सबक लेकर दूसरे बाजीराव ने अपने रास्ते में अलिजाबहाद्दर कब भी काटा बन सकता है ध्यान में रखकर एक चाल चली।

कुछ दिन से उसे मस्तानी का भूत शनिवारवाडे में देखने को मिलता था। उस भूत को मस्तानी महल से भगाने के लिए मांत्रि को को बुलाया गया। तंत्रमंत्र हुये, होममहवन किया। लेकिन मस्तानी का भूत महल छोड़कर नहीं गया। इसलिए उसके सलाहकारों ने उसे सलाह दी कि, महल ही गिरा दिया जाये तो भूत रहेगा कहाँ? बाजीराव ने अलिजाबहाद्दर को पुणे में नया मकान दिया। अलिजाबहाद्दर ने हमेशा के लिए शनिवारवाडा छोड़ दिया और वो पुणे के नये मकान में जाने के बाद बाजीराव मस्तानी महल पूरी तरह से तहसनहस कर दिया।

द्वितीय बाजीराव डरपोक था। नारायणराव पर जब कातिलाना हमला हुआ था, तो वह अपने चाचा रघुनाथराव के पैर पकड़कर गिड़गिड़ा कर अपने जान की भीख माँग रहा था। उसके आक्रोश से राघोबादादा का महल गूंज उठा था। और बाद में ये आवाज सिर्फ बाजीराव को ही सुनाई देती थी। उस आवाज से वह इतना डरता था। उसने मांत्रिको से, ब्राह्मणों से शांतियज्ञ करवाया। लेकिन नारायणराव की भटकती आत्मा ने उसे चैन से सोने नहीं दिया। अतः उसने अपने लिए पुणे के बुधवार पेठ, शुक्रवार पेठ में बनवाये हुए महलों में रहना पसंद किया। शनिवारवाडे में रहना उसने छोड़ दिया। दरबार में शामिल होने हेतु वो सिर्फ शनिवारवाडे में आता था और दरबार के कामकाज होने के बाद शनिवारवाडा छोड़कर जाता था।

खुद पेशवा ने ही वाडे में रहना छोड़ दिया तो उसकी तरफ उसके रिश्तेदार और नौकर ध्यान क्यों देंगे? शनिवारवाडे की शाही शान कम होती जा रही थी। पेशवा ने रहने के कारण आम आदमी का आना–जाना कम हुआ। अंग्रेज वकील और बड़े–बड़े सरदार दरबार भरने के बाद आते थे। पेशवा की यह बेरूखी और कर्तव्यहीन दृष्टि के कारण उसकी उपेक्षा होने लगी। परिणामस्वरूप वाडे में दो–चार आग लगने की दुर्घटनायें घटी।

बात यह है कि पूरे हिंदुस्थान का राजपाट जिस वाडे से किया जाता था मुगल सल्तनत की ताकत को जिस शनिवारवाडे की ताकत शेष पृष्ठ 11 पर

आमजन की पूंजी गर्त में डालने की तैयारी

जब हमारे हुक्मरान बातें करते है तो हमें यह महसूस होता है कि हमारे दिन जल्द ही फिरने वाले हैं। मामला चाहे रसोई गैस का हो या फिर स्वच्छ भारत अभियान का। जोर शोर से उठने वाला मुद्दा काले धन के आधार पर १५ लाख खाते में आने का हो या फिर बैंको की माली हालात सुधारने का। बैंको में जमा धन आम आदमी की पूंजी होता है और अगर पूंजी की सुरक्षा की एजेन्सी को सरकार की ओर से प्रत्याभूत करने से आनाकानी की जाय या मना कर दिया जाय तो एजेन्सी की कार्यप्रणाली प्रभावित होती है।

बैंको के राष्ट्रीयकरण का उद्देश्य बैंको के लाभापार्जन के उद्देश्य को बदल कर भारत की आर्थिक स्थिति मजबूत बनाने तथा आधारभूत ढाचे अर्थात कृषि, लधु उद्योग, रोजगार उपेक्षित क्षेत्रो में प्राथमिकता से ऋण उपलब्ध कराना था। लेकिन वर्तमान उदारीकरण के दौर में बैंको को मिली स्वायता के कारण बैंक अपनी हानी दर्शाने वाली शाखाओं को बन्द करने में रूची दर्शा रहे हैं। शाखा स्थर पर लाभ हानी की गणना करना गलत है क्योकि लाभ के लिये उस शाखा से कम व्याज की जमाऐं और अधिक व्याज पर दिये गये व्यवसायिक ऋण होगें तब ही लाभार्जन सम्भव है ओर ये प्रत्येक शाखा के लिये सम्भव नहीं हो सकता। प्रायः बैंक शाखाओं में कम व्याज दर पर स्थानीय लोगों की जमाऐं होती है ओर यह जरूरी नहीं कि उसी स्थान पर व्यवसायिक इकाईयां भी हों। ऐसी स्थिति में बैंक शाखा धाटा दर्शाती है ओर बैंक इन शाखाओ की जमाओं का उपयोग अन्य स्थान पर ऋण उपलब्ध करा कर लाभार्जन करता है। बैंक अगर वास्तविक रूप से हानी के कारणों को खोजे तो कुछ और ही कारण सामने आयेगें।

किसी क्षेत्र में आधारभूत ढाचें को स्थापित करने के लिये उद्योग लगाने के लिये ऋण अभाव में लोग उद्योग लगाने के लिये इच्छुक नहीं हैं तो इसके लिये प्रयास सरकार को करने होगे। प्राय यह भ्रम फेलाया जाता है कि कृषि क्षेत्र में ग्रामीण इलाकों में उद्योग स्थापित करने में डूबते ऋण के कारण बैंको को भारी घाटा हो रहा है। जब की वास्तविकता यह है कि इन क्षेत्रों में डूबते ऋण बैंको के कुल डूबते ऋणो की तुलना में नगण्य है। अगर पूरे भारत के इन क्षेत्रो के ऋणो को ले लिया जाय तो ये माल्या के ऋण के बराबर भी नहीं होगें। बैंको की अधिकाश जमाऐं शून्य व ३.५ प्रतिशत पर होती है जिन्हे बैंक ६ से १२ प्रतिशत पर निवेश करके लाभार्जन करते हैं।

बैंक अब अपने नीयमों के तहत खातो में न्यूनतम राशी नहीं होने पर अप्रत्याशित रकम की वसूली कर रहे हैं। अभी दिसम्बर की तिमाही में केवल स्टेट बैंक आफ इन्डिया ने खातो में न्यूनतम राशी नहीं होने के कारण १७८५ करोड रू वसूल किये जब की बैंक का पिछले साल का कुल लाभ ही १३६३ करोड रूपये रहा है। अगर सारे बैंको की राशी को जोडा जाय तो रकम कहां पहुचेगी पता नहीं। इसी प्रकार से निष्क्रिय खातो की राशी को भी बैंक अपने लाभ में समाहित कर लेता है और ग्राहकों को पता भी नहीं चलता। आमजन को शायद यह भी मालुम नहीं है कि रिजर्व बैंक दस साल से अधिक निष्क्रिय खातो की राशी को अपने यहां ले लेता हैं और अरबों रुपये की यह राशी अप्रत्यक्ष रूप से सरकार की जेब में चली जाती हैं। इस राशी के दावेदार एक दो प्रतिशत भी लोग पलट कर वापस नहीं आते हैं।

किसी भी बैंक की शाखा से अलिखित रूप से बैंकिंग सेवा लेना भारतीय नागरिक का मूल अधिकार है। बैंको द्वारा लगातार ए टी एम सेवा मोबाईल बैंकिग सेवा इन्टरनेट सेवा में लगातार इजाफा किया जा रहा है जब की वास्तविकता यह है कि इनका उपयोग बडने से इनका लागत मूल्य लगातार धटता जा रहा हैं। आवश्यकता इस बात की है कि बैंक अपनी ऋण की डिलेवरी आसान बनाये वसूली का सूनिश्चितकरण हो, बैंक सेवा निर्धारित हो अन्य कार्यो के लिये कर्मचारियो का उपयोग नहीं किया जाय जिससे बैंक अपने मूल उद्देश्य से भटके नहीं।

बैंको के शुद्धीकरण के लिये तथा वर्तमान में भारत सरकार द्वारा २.११ लाख करोड के केपिटलाईजेशन के पश्चात ८३००० हजार करोड की अतिरिक्त पूंजी और भारत सरकार द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र के बैंको में डाली गयी है जब जाकर उन्हे कुछ संजीवनी मिली है। लेकिन यह समझ से परे है कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक ही क्यो घाटे में आ जाते है और उन्हे बार बार संजीवनी क्यो उपलब्ध करानी पडती है। निजी क्षेत्र के बैंको में ऐसी क्या कार्य प्रणाली है जो कि उन्हे लगातार प्रतिस्पर्धा में बनाये रखती है तथा अच्छे से अच्छा लाभार्जन के साथ उन्नति की ओर अग्रसर है।

वर्तमान में शीत सत्र में बैंको से सम्बन्धित एक बिल प्रस्तुत किया जाना था जो की अब बजट सत्र में प्रस्तुत होगा जिसके तहत बैंक अपने आप को लाभार्जन की स्थिति में नहीं होने पर अथवा संकट की स्थिति में आप की जमा पूंजी पर अपना अधिकार कर सकते है। आइये इस सम्बन्ध में पूरे कानून की एक समिक्षा अगर करें तो निम्न बाते निकल कर सामने आती है कि:–

संसद में सत्र में पेश होने वाला एफ आर डी आई बिल आपकी पूंजी पर नकेल कसने के लिये लाया जा रहा है। प्रधानमंत्री जी ने अपने भाषणों में कहा कि एफ आर डी आई को लेकर बहुत बडी मात्रा में अफगाह फैलाई जा रही है।सरकार बैंको में ग्राहकों की पूंजी को सुरक्षित रखने के लिये उनके हितो को सुरक्षित, रखने के लिये लगातार काम कर रही है, लेकिन वास्तविकता कुछ ओर ही है। इस कानून में एक प्रावधान बेल इन का है, बेल इन का मतलब है कि अगर बैंक संकट में है और उसके बन्द होने की स्थिति आती है तो बैंक आपके खाते में जो पैसा आपने रखा है उस पैसे का इस्तेमाल बैंक अपने को बचाने के लिये करेगें और संकट से निकालने के लिये करेगें।

सवाल ये है कि हमारे बैंक संकट में क्यो हैं। हमारे बैंक काफी दिनो से संकट में है और इसका कारण है कि लम्बे समय से बैंक द्वारा कारपोरेट्स को बडे बडे पूंजीपतियो को लाखो करोडो रुपये का कर्जा दिया और ये कर्ज अब वो लोटाने की स्थिति में नहीं हैं या ये कहें कि ये बडे घराने इन्हे लोटा नहीं रहे है जिसके कारण बैंक का खजाना समाप्त हो रहा है। इन्डिया रेटिंग के अनुसार २०१७ के आंकडो के अनुसार जो ये ऋण लोटाया नहीं जा रहा है वह १३ लाख करोड रुपये तक पहुच चुका है। अकेले अनिल अम्बानी की एक कम्पनी रिलाइन्स कम्यूकेशन पर ही ४५ हजार करोड रुपये का ऋण एन पी ए में तब्दील हो गया है, और मुकेश अम्बानी द्वारा धीरूभाई अम्बानी के जन्म दिन पर अपने छोटे भाई को बेलइन के बतोर २३००० करोड रुपये दिये हैं। इन कम्पनीयो के विरूद्ध ना तो कोई कार्यवाही हो रही है ना ही वसूली हेतू कुडकी की जा रही है, ना ही इनकी सम्पत्तियां बेची जा रही हैं। डर है कि अगर कार्यवाही की तो ये कम्पनियां बन्द कर देगें जिससे लोग सडकों पर आ जायेगें और बेरोजगार हो जायेगें जैसा कि रिलाइन्स कम्यूकेशन ने किया है। अब इनके बैंक ऋण को माफ किया जा रहा है। इस केन्द्र सरकार के कार्यकाल में १.८८ लाख करोड रुपये बैंक लोन के माफ किये जा चुके हैं और ७.४७ लाख करोड रुपये अभी भी माफ किये जाने अर्थात बैंको में राईट आफ किये जाने की स्थिति में है। इनसे बैंको की लाभ देयता पर फर्क पडेगा। और तो और रिजर्व बैंक आफ इन्डिया ने तो यहां तक कह दिया कि इन कम्पनियो के नाम भी पब्लिस नहीं किये जायेगें जिन्होने ये कर्ज लिया और चुकाने की स्थिति में नहीं है तथा जिनके ऋण माफ किये जा चुके हैं। आर टी आई में पूछे सवाल पर कि अडानी को कितना ऋण दिया और कितना माफ किया तो स्टेट बैंक आफ इन्डिया ने जवाब दिया कि हम जवाब देने के लिये बाध्य नहीं हैं। जब कि इन लोगों पर कार्यवाही होनी चाहिये लेकिन स्टेट बैंक द्वारा ही फिर से अडानी को ऋण दिया गया जिससे कि वह पुराने ऋण का चुकाया बताते हुये फिर से नया ऋण ना चुकाये।

अब प्रश्न ये उठता है कि इन ऋण को माफ करने तथा पुनः ऋण देने का निर्णय किसने किया तो कहा जा रहा है कि जो जी२० देशो का प्लेटफार्म है उस पर ये तय हुआ है। और हम चूकि जी२० देशो के सदस्य है इस लिये हमें भी बेलइन का प्रावधान करना पड रहा है। २००८ में अमरीका में एक बहुत ही गहन आर्थिक संकट आया था, जिसके कारण अमरीका के सबसे मजबूत बैंक लेहमेन ब्रदर्स का दिवाला निकल गया था, इस समय अमरीका ने उसे बेलइन किया था, और इसके फेल हो जाने के कारण भारत में भी आई सी आई सी आई के डूबने की नोबत आ गयी थी क्योंकी लेहमेन ब्रदर्स के ४० प्रतिशत शेयर भारत में इस बैंक के पास थे। अब भारत में यह कहा जा रहा है कि बैंक कभी भी संकट में आये ही नहीं इस लिये बेलइन का प्रावधान एफ आर डी आई के तहत किया जा रहा है। जो आम आदमी का जमा पैसा है बैंक अपनी मर्जी से, बिना जमा कर्ताओं से पूछे, उनकी मर्जी के खिलाफ, कभी भी इस्तेमाल कर सकता है। एफ आर डी आई के प्रावधानो के अनुसार बैंक बोर्ड ये तय करेगा कि आपकी जमा रकम में से आपको कितना पैसा वापस मिलना है। मान लो आपका एक लाख रुपया बैंक में है ओर बोर्ड तय करता है कि एक लाख में से दस हजार ही मिलेगा तो आप कुछ नहीं कर सकते। हो सकता है आपका बाकी पैसा फिक्स डिपोजिट में बदल दे या फिर बैंक की इक्विटी में या अपनी हानी में समायोजित कर ले, बैंक इक्विटी का मतलब है कि आपके पैसे की कोई गारन्टी नहीं है या फिर आपकी फिक्स डिपोजिट कब मिलेगी किस ब्याज पर होगी सब कुछ बोर्ड में निर्धारित किया जायेगा। ये सभी काम जी२० के नाम पर किया जा रहा है। जब कि जी२० का और कोई सदस्य देश इस प्रावधान को नहीं कर रहा है।

यह कानून किस प्रकार अलग है : पहले जब कोई बैंक संकट में होती थी तो रिजर्व बैंक ऑफ इन्डिया हस्तक्षेप करती थी और जिस बैंक की आर्थिक स्थिति अच्छी होती थी उस बैंक में उसे विलय कर ग्राहकों की पूंजी को सुरक्षित करती थी और सरकार की और से १६६२ के कानून के तहत आपके एक लाख रुपये जो कि गारन्टी है वह गारन्टी कारपोरेशन आफ इन्डिया से दिये जाते थे। अब सरकार गारन्टी तो लेगी ही नहीं बल्की आपके पैसे का अधिकार बोर्ड के पास चला जायेगा। रिजर्व बैंक की भी इसमें कोई भूमिका नहीं होगी। बोर्ड जब चाहे ये तय कर ले की आपका पैसा फ्रीज हो जाय या इक्विटी में बदल जाय या फिर बैंक अपने हानी की पूर्ती कर ले। आपका पैसा आपको मिलेगा या नहीं इस बात की कोई गारन्टी इस कानून में नहीं है, यह बोर्ड तय करेगा।

बैंक खाली हो रहें हैं उनकी हानी बढ रही हैं, ये सब अभी नहीं हुआ है। शेष पृष्ठ 10 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,
श्री नरेन्द्र मोदी जी,
माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार
साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली-११००११

विषय : वक्फ संपत्तियों के अधिग्रहण की मांग।

महोदय,

यह सर्वविदित है कि हिन्दुस्थान में वक्फ बोर्डो के कब्जे में जो सम्पत्तियाँ हैं, वे सब स्वाधीनता से पहले मुसलमानों के शासन में हिन्दुओं से छीनी गई सम्पत्तियाँ हैं, जो उन हिन्दुओं की थी जो जजिया कर नहीं दे सकते थे।

चूँकि मुसलमानों को पाकिस्तान और बांग्लादेश के रूप में हिन्दुस्थान की लाखों एकड़ भूमि दे दी गई है, इसलिए शेष विभाजित हिन्दुस्थान में वक्फ की कोई सम्पत्ति नहीं हो सकती और जो सम्पत्तियाँ आज वक्फ बोर्ड के कब्जे में हैं, उन्हें तत्काल मुक्त कराया जाना आवश्यक है। देश में वक्फ बोर्ड के कब्जे में लाखों एकड़ भूमि है, जिसे तत्काल अधिग्रहण करना भारत सरकार का दायित्व है । शीघ्र आवश्यक कार्रवाई करने की कृपा करें। इस सम्बंध में की गई कार्रवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें।

सादर

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)	(मुन्ना कुमार शर्मा)	(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

समाज विरोधी विदेशी नववर्ष का त्याग करें, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन नववर्ष मनायें:हिन्दू महासभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने देश के हिन्दुओं का आहवान किया है कि ३१ दिसम्बर या ०१ जनवरी को मनाये जाने वाले विदेशी नववर्ष का बहिष्कार करें तथा चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन भारतीय नववर्ष मनायें। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों ने भारतीय संस्कृति का नाश करने के लिये अंग्रेजी नववर्ष को भारतीयों पर थोप दिया, ताकि पश्चिमी सभ्यता का प्रचार–प्रसार हो तथा भारतीय अपनी गौरवशाली परंपरा को भूल जायें। अंग्रेज तो १६४७ में चले गये, परन्तु तथाकथित भारतीय अंग्रेजों ने उनकी विरासत को संभाल लिया तथा भारतीय संस्कृति का नाश करने की परंपरा जारी रखी। उन्होंने कहा कि भारतीय युवाओं में मांस, मदिरा, महिलाओं को अपमानित करने व फूहड़पन को बढ़ावा देने के लिये ३१ दिसम्बर को नववर्ष मनाने की परंपरा शुरू की गई। ३१ दिसम्बर को लोग शराब पीकर नंगानाच करते हैं तथा महिलाओं को अपमानित करते हैं। इसलिये भारतीय इस समाजविरोधी नववर्ष का बहिष्कार करें। राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा है कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा हमारा नववर्ष है। हमें इसी दिन नववर्ष मनाना चाहिए। हिन्दू महासभा नेताओं ने मांग की है कि सरकार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन बड़े पैमाने पर नववर्ष कार्यक्रमों का आयोजन करें, ताकि युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति का ज्ञान प्राप्त हो सके।

शेष पृष्ठ 9 का **आमजन की पूंजी गर्त में......**

लम्बे समय से हमारे बैंक हानी झेल रहे हैं, उनके एन. पी. ए. बढ रहे हैं, यानी की उनके ऋण डूबत में जा रहे हैं, और शायद यही कारण है कि एक साल पहले नोट बन्दी भी करायी गयी जिससे कि बैंकों में पैसा आ सके। पूरा देश बैंक की लाइनों में लगा रहा और अपना पैसा बैंको में जमा कराया। काले धन के नाम पर जनता को मूर्ख बनाया गया १५ महीने बाद भी आज तक यह नहीं बताया गया कि कितना काला धन वापस आया कितना पैसा बैंको में जमा हुआ और पुरानी करेन्सी के रूप में वापस आया। अब सरकार ने क्या किया जो पैसा आपने नोट बन्दी के दौरान जमा कराया था उस पर भी सरकार ने रोक लगा दी कि आप ५०हजार से ज्यादा नहीं निकाल सकते। और अब यह प्रावधान किया गया कि अगर आप तीन बार से ज्यादा पैसा निकालते है तो आप पर जुर्माना लगेगा। और तो और बचत खातों में न्यूनतम इतिशेष की राशी बडा दी गयी और ५००० से कम रखे जाने पर जुर्माने का प्रावधान किया। जब इससे भी काम नहीं चला और बैंको को नही उभारा जा सका तो सरकार ने क्या किया, सरकारी बैंको में २.११ लाख करोड रुपये बैंको में रीकेपिटलाईजेशन के नाम पर डाला गया और जब इससे भी काम नहीं चला तो फिर ८३ हजार करोड रुपया और दिया गया। अब आप सोचिये कि कितना ऋण इन घरानो को दिया गया और ये चुका नहीं रहे हैं। अब यह कानून बना कर विकास के नाम पर हम सभी को परोसा जा रहा है कि आपका पैसा कब बैंक अपने काम में ले लेगें आपको भी पता नहीं चलेगा।

चुनाव के समय आपसे पूछा जाता है कि आपको मन्दिर चाहिये या मस्जिद आप इसमें उलझते रहिये इधर आपकी जीवन भर की कमाई कब साफ हो जायेगी, इस कानून को बनाने के लिये आपसे कोई नहीं पूछ रहा। आपने यह सोच कर बैंक में अपना पैसा रखा कि मेरा पैसा सुरक्षित है लेकिन अब आपका पैसा सुरक्षित नहीं है। विकास का ये माडल जो कि हम विभिन्न प्रकार के टेक्स देते हैं, डायरेक्ट या इनडायरेक्ट वो राशी हमारे रोजगार के लिये खर्च ना हो, हमारे कृषि के लिये खर्च ना हो, हमारे स्वास्थ्य के लिये खर्च ना हो, किसानो को उनकी फसल के उचित दाम के लिये काम नहीं लिये जाय, बल्कि यह पैसा पहले इन ओद्योगिक घरानो को टेक्स छूट के लिये दिया जाय तथा इन ओद्योगिक घरानो के ऋण माफ करने के लिये काम आये क्योकि इन घरानो ने रोजगार उपलब्ध करा रखा है।

इसलिये हम सभी की ये जिम्मेंदारी है कि इस कानून के लिये आवाज उठायें, हो सकता है कि मीडिया इस पर कोई बहस नहीं छेडे, कोई ब्रेकिंग न्यूज ना बनाये, क्योंकी उनको सरकार की और से मेनेज कर लिया जायेगा। कोई जो आवाज उठाये उसे दबा दीया जाय उस पर मुकदमें दायर कर दिये जाय। राशी आपकी है, सावधान आपको रहना है, नहीं तो अमरीका के लेहमेंन ब्रदर्स जैसी बेलइन की हालत हो जायेगी और उसके कारण भारत में आई सी आई सी आई को जिस प्रकार पूर्व में रिजर्व बैंक द्वारा रातोंरात केपिटलाइजेशन कर बचा लिया गया था अब वो स्थिति ना आ पाये। शायद ही किसी को पता हो इसी प्रकार की स्थिति बैंक आफ राजस्थान की भी हुयी थी और करीब ३५० करोड के एन पी ए और १०२करोड की हानी होने के कारण बैंक की समस्त रिजर्व केपिटल समाप्त हो गयी थी, लेकिन रिजर्व बैंक आफ इन्डिया के हस्तक्षेप से उसका विलय आई सी आई सी आई में किया गया। अब पुनः घाटे वाले बैंको को दूसरे बैंको में विलय किया जा रहा है इसकी शुरूआत एस बी आई के विलय से हो चुकी है। एस बी आई के घाटे को छिपाने के लिये इसके सबसीडी बैंको का विलय कर एक विस्तार वादी बैंक बनाने का प्रयास किया गया और एशिया का सबसे बडा बैंक बनाया गया लेकिन उससे भी काम नहीं चला तो फिर सरकार ने बेलइन किया और बैंक द्वारा करीब एक हजार से ज्यादा शाखाओ को बन्द कर इनके लाइसेन्स कहीं और काम लिये जा रहे हैं। सरकार द्वारा अब एक नया फण्डा और खेला जा रहा है एयरटेल, पोस्ट आफिस पे टी एम, जैसे प्लेटफार्म को पेमेन्ट बैंक का दर्जा दिया जा रहा है जिनमें केवल आपकी राशी जमा ही होगी और ये बैकों की तरह ऋण नहीं देगें। अर्थात अब इनके माध्यम से माफ किये जाने वाने ऋणो के बदले बेलइन किया जा सके।

शेष पृष्ठ 6 का **जनसंख्या नियंत्रण पर......**

जनसंख्या नियंत्रण कानून बनवाने में उनका सहयोग लें और उनका सहयोग भी करें। इसके अतिरिक्त करोड़ों राष्ट्र भक्तो को अपने अपने स्तर से इसके लिए पत्र लिख कर सरकार पर दबाव बनाना चाहिये ताकि यह अभियान एक ठोस रुप लेकर सफल हो सकें। बुद्धिजीवियों, पत्रकारों व राष्ट्रभक्तों को भी सम्मेलनों और गोष्ठियां द्वारा जनजागरण अभियान चला कर बढ़ती मुस्लिम जनसंख्या के दुष्प्रभावों के प्रति सामान्य नागरिकों को सतर्क करते हुए धर्म व जाति से ऊपर उठकर सभी के लिए इस कानून को बनवाने के लिए यथाशक्ति प्रयास करने होंगे। आज यह हम सभी की सर्वोच्च प्राथमिकता हो कि इस ज्वलंत राष्ट्रीय समस्या का अधिक से अधिक प्रचार करके इसके निवारण के लिए सभी यथासंभव सहयोग करके अपनी मातृभूमि के प्रति इस अप्रत्यक्ष धार्मिक अनुष्ठान को पूर्ण करायें।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 1 का

पाकिस्तान-बांग्लादेश बॉर्डर पर.......

उनका गठन हो जाएगा। बीएसएफ के प्रत्येक बटालियन में १००० से अधिक जवान और अधिकारी होते हैं। मंत्रालय ने इस सिलसिले में बल के प्रस्ताव को १६ जनवरी को मंजूरी दी थी और बीएसएफ मुख्यालय को इसकी प्रक्रिया जल्दी शुरू करने को कहा था, इस योजना पर २००० करोड़ रुपये खर्च होंगे। पाकिस्तान और बांग्लादेश से लगी सीमाओं की पहरेदारी के बल के कार्य के तहत चार बटालियनों का गठन किया जाएगा। जबकि शेष दो बटालियन कार्यकारी इकाइयों की पूरक होंगी और वे पहले से तैनात जवानों की जगह लेंगी। सरकार की योजना देश के दो सीमा प्रहरी बलों बीएसएफ और आईटीबीपी में १५ नई बटालियनें गठित करने की है। इसका यह उद्देश्य इन बलों की पहरेदारी वाली सीमाओं की बेहतर सुरक्षा करना है। भारत तिब्बत सीमा पुलिस आईटीबीपी पर चीन से लगी देश की ३४८८ किमी लंबी सीमा की पहरेदारी की जिम्मेदारी है। सूत्रों ने बताया आईटीबीपी को नई बटालियनें गठित करने की इजाजत देने की गृह मंत्रालय की मंजूरी आखिरी चरणों में है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से पाकिस्तान तथा बांग्लादेश सीमा को पूर्ण रूप से सील करने की मांग की है ताकि कोई आंतकी या घुसपैठियां देश में प्रवेश न कर सकें।

शेष पृष्ठ 1 का

शोपियां फायरिंग मामले में सेना.......

रुख पर सख्त नाराजगी जताई है। उन्होंने कहा कि राज्य की महबूबा मुफ्ती की सरकार ये एफआईआर वापस ले नहीं तो उनकी सरकार गिरा दी जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि हम अभी तक इस सरकार को क्यों चला रहे हैं, ये बात हमारी समझ में नहीं आ रही है। अधिकारियों ने बताया कि प्राथमिकी सेना की गढ़वाल यूनिट के खिलाफ रनबीर दंड संहिता की धारा ३०२ और ३०७ के तहत दर्ज की गई है। प्राथमिकी में सेना के एक मेजर का भी उल्लेख है जिसने शनिवार को घटना के समय सैन्य कर्मियों का नेतृत्व किया था। शोपियां के गनोवपोरा गांव में पथराव कर रही भीड़ पर सैन्य कर्मियों की गोलीबारी में दो नागरिक मारे गए थे। इस घटना के बाद मुख्यमंत्री ने घटना की जांच का आदेश दे दिया था। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण की चुप्पी का विरोध करते हुए कहा है कि हमें सेना को पूर्ण अधिकार देना पड़ेगा तभी देश को आंतकवाद और घुसपैठ की समस्या से छुटकारा मिल सकता है।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंतर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामूलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक...150/- रुपये
द्विवार्षिक..300/- रुपये
आजीवन सदस्य...................................1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 8 का

पुणे का शनिवारवाड़ा....

ने परास्त किया था और अफगानिस्तान के अटक तक पेशवाओं का आतंक जिस वास्तु से निर्माण किया गया था। उस शनिवारवाडे के ध्वज स्तंभ पर एक राष्ट्रविरोधी ब्राह्मण आदमी के हाथों अंग्रेजों का निशाण (झंडा) चढ़ता हुआ देखना नसीब हुआ।

येरवडा के मैदान में १६ नवम्बर १८१७ में मराठों की पराजय हुई। १७ नवम्बर को अंग्रेजों ने शनिवारवाडे पर कब्जा किया। अंग्रेजों को खुलेआम अपना दोस्त समझने वाले 'बालाजी नातू' को जनरल स्मिथ ने शनिवारवाडा कब्जे में आने के खुशी में पूछा। बालाजी नातू को दादाजी के नाम से पुकारा जाता था।

'दादा, तुम शनिवारवाडे पर अपना निशाण लगा सकते हो।'

'हाँ, क्यों नहीं जनरल साहब, आप मेरे साथ पच्चीस सुरक्षा रक्षक दो। उसके बाद राणी का झंडा लगा के आता हूँ।'

उसकी माँग जनरल ने पूरी की। बालाजीपत नातू ब्रिटिश गार्ड के साथ बिगुल बजाते शनिवारवाडे में पहुँचे। दिल्ली दरवाजे के ऊपर के नगरखाने के माथे पर मराठों का जो कुसुंबी ध्वज हवा में लहरा रहा था। नातू ने उसे उतरवाया और बड़ी शान से ब्रिटिशों का यूनियन जैक, निशाण शनिवारवाडे पर लगवाया। साथ के सुरक्षा सैनिकों ने बिगुल बजाकर सलामी दी। शनिवारवाडे पर ब्रिटिश ध्वज लगा, उसी क्षण से पेशवाई का अंत हुआ।

(शेष अगले अंक में)

शेष पृष्ठ 5 का

सन्ध्या ईश्वर की उपासना.....

प्रार्थनायें इनसे ही करनी चाहिये। ईश्वर के हमारी आत्माओं के भीतर विद्यमान होने से उसकी उपासना तो हर पल व हर क्षण होती रहती है व उस पर ध्यान केन्द्रित की जा सकती है। अन्य चेतन देवता माता, पिता, आचार्य आदि की यथासमय उपासना आदि की जा सकती है व करनी भी चाहिए। यह भी ध्यान रहे कि ईश्वर को हमसे किसी पदार्थ व सेवा आदि की आवश्यकता नहीं है जबकि हमारे माता, पिता व आचार्यों को होती है। अतः हमारा कर्तव्य है कि हम अपने माता, पिता, आचार्य व विद्वानों की तन, मन व धन से श्रद्धापूर्वक सेवा सुश्रुषा करें।

अग्निहोत्र में हम जड़ देवताओं का पूजन, सत्यक्रियाओं द्वारा उनका शोधन व गुणवर्धन के साथ उन्हें हानि न पहुँचे, इसका ध्यान रखते हैं। संसार में हमारे लिए प्राणों व अन्न आदि का सर्वाधिक महत्त्व है। अग्निहोत्र यज्ञ करने से सभी जड़ पदार्थ पुष्ट व लाभान्वित होते हैं। अग्निहोत्र से वायु शुद्धि का प्रत्यक्ष व प्रमुख लाभ होता है। वायु में घृत व यज्ञ सामग्री के प्रक्षेपण, आहुतियों व उनके प्रज्वलन से जो शुद्ध प्राण वायु उत्पन्न होती है उसमें श्वांस लेने से मन व स्वास्थ्य को लाभ होंने के साथ अनेकानेक रोगों की निवृत्ति व उनसे रक्षा होती है। वायु के शुद्ध होने से आकाशस्थ वायु व जल दोनों शुद्ध होते हैं। शुद्ध जल वा वर्षा से कृषि उत्पाद, वनस्पतियाँ व औषधियाँ आदि भी शुद्ध व पवित्र उत्पन्न होती है जिससे मनुष्य के स्वास्थ्य को लाभ सहित मनुष्यों के बल व शक्ति में वृद्धि होती है। अग्निहोत्र से पुरोहित जी आदि विद्वानों की संगति होने से नये–नये ज्ञान विज्ञान की उपयोगी बातों की जानकारी भी यज्ञकर्ता व उसके परिवार के लोगों को मिलती है। ऐसे अनेकानेक लाभ यज्ञ की पुस्तकों व ग्रन्थों में उपलब्ध है। यज्ञ ऐसा कर्म है जिसका लाभ इस जीवन में तो होता ही है, परजन्म में भी यज्ञ का लाभ मिलता है जिनका दर्शन आदि सत्शास्त्रों में विधान है। जहाँ यज्ञ होता है उससे पवित्र वायु चारों ओर फैलता वा दूर–दूर तक जाता है और वहाँ प्राणियों व मनुष्यों को श्वांस के द्वारा लाभान्वित करता है। इसका पुण्य भी यज्ञकर्ता को जन्म–जन्मान्तर में मिलता है। यज्ञ में वेदमंत्रों का उच्चारण करने से ईश्वर की नाना प्रकार से स्तुति व प्रार्थनायें होती हैं जो अनर्थक न होकर सार्थक व समयानुसार पूर्ण होती हैं। अग्निहोत्र यज्ञों में वेद मंत्रों का उच्चारण होने से उनकी रक्षा होने के साथ वेद मंत्रों में निहित यज्ञ के लाभों का ज्ञान भी यज्ञकर्ता को प्राप्त होता है। इस प्रकार प्रातः सूर्योदय के समय व सायं सूर्यास्त से पूर्व किया जाने वाला अग्निहोत्र भी गृहस्थी व अन्य यज्ञ करने वाले सभी मनुष्यों को समान रूप से लाभ पहुँचाता है। यज्ञ से यज्ञ करने वाले व आसपास रहने वाले जो यज्ञ नहीं करते, वह भी समान रूप से लाभान्वित होते हैं। इस अग्निहोत्र को करने से जड़ देवताओं को लाभ होता है व हम जो प्राकृतिक पदार्थों का भोग करते हैं, उससे एक सीमा तक हम उत्रृण भी होते हैं। यह भी जान लें कि यज्ञ देवपूजा, संगतिकरण व दान को कहते हैं। देवपूजा में अग्निहोत्र आ जाता है। यज्ञ में विद्वानों के आगमन से उनसे संगतिकरण होने से हमें नाना प्रकार से लाभ होते हैं। दान न केवल धन अपितु श्रेष्ठ गुणों के आदान–प्रदान को भी कहते हैं। इस दान से व्यक्ति, समाज व राष्ट्र का महान उपकार होता है। यह यज्ञ की महनीयता को भी प्रदर्शित करता है। पाठकों को यज्ञ विषयक ग्रन्थों, मुख्यतः 'यज्ञ–मीमांसा' को पढ़कर इनके लाभों से सुपरिचित होना चाहिए तभी वह यज्ञ करके लाभान्वित हो सकेंगे।

Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष- 41 अंक-47
कल्पादि सम्वत् 1972949117

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 14 फरवरी से 20 फरवरी 2018 तक
फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी से फाल्गुन शुक्ल पंचमी 2074 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

संबधों का नया.. पृष्ठ- 3

डायबिटिक नैफ्रोपैथी... पृष्ठ- 4

सन्ध्या ईश्वर की उपासना.. पृष्ठ- 5

पुणे का शनिवारवाडा... पृष्ठ- 8

जो पूंजीपति मन भाए. पृष्ठ- 12

- एक देश, एक चुनाव का नया जुमला
- जनसंख्या नियंत्रण पर कानून बनें
- केन्द्रीय विद्यालयीय पाठ्यक्रमों में इस्लामिक आक्रान्ताओं का महिमा मण्डन क्यों?
- आमजन की पूंजीं गर्त में डालने की तैयारी

पाकिस्तान-बांग्लादेश बॉर्डर पर तैनात होंगे बीएसएफ के ७००० जवान

सीमाओं को पूरी तरह से सील किया जाये–हिन्दू महासभा

• संवाददाता •

पाकिस्तान से लगी देश की अशांत सीमा की पहरेदारी करने वाला सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) छह नई बटालियन गठित करेगा। जिनमें करीब ७००० कर्मी होंगे, गृह मंत्रालय ने बीएसएफ को २०६०.६४ करोड़ रुपये की राशि भी आवंटित की है। नई बटालियनों को भारत–बांग्लादेश सीमा पर तस्करी और घुसपैठ के जोखिम वाले इलाकों में भी तैनात किया जाएगा। सूत्रों ने बताया कि बल द्वारा नई भर्तियां किए जाने वाले सैनिकों को छह बटालियनों में तैनात किया जाएगा। करीब साल भर में शेष पृष्ठ 11 पर

शोपियां फायरिंग मामले में सेना ने कराई काउंटर एफआईआर, दो नागरिकों की गई थी जान

भारतीय रक्षा मंत्री की चुप्पी का हिन्दू महासभा ने किया विरोध

• संवाददाता •

२७ जनवरी को शोपियां में सेना की फायरिंग में दो लोगों के मारे जाने के बाद जम्मू–कश्मीर सरकार ने आर्मी मेजर समेत सेना के कई लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई है। इसके बदले में सेना ने भी काउंटर एफआईआर दर्ज कराते हुए कहा है कि उन पर हमला किया गया था और उन्होंने आत्मरक्षा में गोली चलाई। सेना ने इस मामले में मेजर को क्लीन चिट भी दी है। इस बीच राज्य सरकार के इस रुख से खफा बीजेपी नेता सुब्रमण्यम स्वामी ने न्यूज एजेंसी एएनआई से बातचीत करते हुए इस मसले पर रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण की चुप्पी पर सवाल खड़े किए। उन्होंने कहा कि मीडिया रिपोर्टों और सोशल मीडिया के मुताबिक जम्मू–कश्मीर की मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने विधानसभा में कहा मैंने शोपियां में सेना की फायरिंग मामले में रक्षा मंत्री से बात की है। उन्होंने कहा है कि आपको लगता है कि यदि कोई अपराध हुआ है तो उसके खिलाफ कार्रवाई कीजिए। स्वामी ने कहा कि इसके बावजूद रक्षा मंत्री ने इस मामले में अपना स्पष्टीकरण नहीं दिया है, क्या हमको उनकी खामोशी को हां माना जाना चाहिए। यदि ऐसा है तो यह पार्टी की नीतियों, भारतीयों की भावनाओं और देशभक्ति के खिलाफ है। यदि वह दो फरवरी तक इस मामले में अपनी सफाई नहीं देती तो मैं इस मुद्दे को सदन में उठाऊंगा। इससे पहले बीजेपी नेता सुब्रमण्यम स्वामी ने जम्मू–कश्मीर सरकार के शेष पृष्ठ 11 पर